गोलालारीय समाज का मुखपत्र

RNI No. MPHIN/2008/26873
No. MP/ICD/1252/2015-2017

श्री गोलालारीय दिगम्बर जैन समाज न्यास इन्दौर

golalariya.darshan@gmail.com

गोलालारीय दर्शन यहां भी देख सकते है –
www.golalariya.com

मासिक
गोलालारीय दर्शन

लेट पोस्टिंग

अपनों के साथ अपनी बातें

सेवा में,

जो भरा नहीं है भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं । हृदय नहीं वह पत्थर है, जिसको समाज से प्यार नहीं ।

वर्ष : 8 अंक : 5 पृष्ठ संख्या : 12 माह – 15 मार्च 2017 सहयोग राशी – आजीवन सदस्य बनें ।

यति सम्मेलन युग प्रतिक्रमण महामहोत्सव में शामिल होंगे लगभग 400 साधु व व्रतीजन

आमंत्रण को नगर नगर पहुंच रही है आयोजन समिति

राजेश जैन, झांसी । आगामी 16 मई से 25 मई 2017 तक जैन तीर्थ करगुवांजी में देश का दूसरा एवं बुंदेलखंड का पहला यति सम्मेलन युग प्रतिक्रमण होने जा रहा है । जिसमें लगभग 450 साधुजन एवं व्रतीजन भाग होंगे । जैन यति सम्मेलन एवं युग प्रतिक्रमण महामहोत्सव में साधु संघों के आगमन की स्वीकृति का सिलसिला निरंतर बढ़ता जा रहा है। महोत्सव समिति के महामंत्री प्रवीणकुमार ने बताया कि महामहोत्सव में गणाचार्य श्री विरागसागरजी, आचार्यश्री विशुद्धसागरजी, आचार्यश्री विभवसागरजी, आचार्यश्री विनिश्चयसागरजी, आर्यिका विदूषी श्री माताजी, मुनिश्री सुप्रभसागरजी, आर्यिका अर्हम श्री माताजी, आर्यिका विविक्त श्री माताजी के ससंघ पधारने का आशीर्वाद प्राप्त हो रहा है । फरवरी के प्रथम सप्ताह में करगुवांजी में यति सम्मेलन महोत्सव के कार्यालय का शुभारंभ समिति कार्याध्यक्ष श्री प्रदीप जैन 'आदित्य' की अध्यक्षता में संपन्न हुआ । साधुजनों को आमंत्रण हेतु पंचायत अध्यक्ष प्रकाशचन्द्र जैन एड., उपाध्यक्ष डॉ. हीरालाल जैन, महोत्सव समिति के सिं. रिषभ जैन, संजय जैन, कर्नल राजीव अहिंसा, जिनेन्द्र सर्राफ, कुन्दनलाल सतभैया, अशोक जैन, रतन, सचिन जैन, श्रेयांस ककरवाहा, अशोक क्रांतिकारी रिषभ जैन दरगुवां, वरुण जैन, श्रीमती आशा जैन, राखी जैन, प्रभा जैन, संतोष जैन (जल निगम), प्रदीप जैन (विश्व परिवार), विनोद जैन ठेकेदार, निर्मल सिंघई, संजय सिंघई आदि ने भिण्ड, भोपाल, देवेन्द्र नगर, ललितपुर, महरौनी, भगवॉ, शाहगढ़, दिल्ली आदि नगरों में पहुँचकर श्रीफल भेंट किए । महोत्सव समिति के अध्यक्ष प्रदीप जैन आदित्य एवं कार्याध्यक्ष राजीव जैन अध्यक्ष अ.भा. विनिश्चय ग्रुप बनाये गये ।

समाज की अद्वितीय पहल

शादी विवाह ग्लैमर और चकाचौंध में लाखों रुपये उड़ा देने के लिए भी जाने जाते हैं । जैन समाज की बढ़ती समृद्धि से ये कार्यक्रम और भी खर्चीले होते जा रहे हैं। ऐसे में आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों के लिए विवाह समारोह आयोजित करना कठिन से कठिनतर होता जा रहा हैं। इन्दौर जैन समाज की ओर से ऐसे परिवारों की मदद के लिए एक अनुकरणीय पहल की गयी हैं। ऐसे परिवारों से सिर्फ सवा लाख रुपये लेकर शादी का आयोजन किया जावेगा। इसमें 200 लोगों के लिए मैरिज गार्डन, टेंट, भोजन, संगीत,घोडी, बैंड बाजा, फेरे से संबंधित पूरी शादी का खर्च शामिल रहेगा । इसके साथ ही वर वधु को गृहोपयोगी वस्तुएं उपहार स्वरूप भेंट दी जायेगी। निःसंदेह यह बेहद अनुकरणीय और प्रशंसनीय पहल हैं। आर्थिक रूप से अक्षम लोगों के लिए यह बहुत मददगार साबित होगी। इस विवाह के आयोजन के लिए विशेष शर्त है कि यह दिन में ही सम्पन्न होगा, रात्रि विवाह निषेध होगा। इन्दौर मे यह आयोजन महावीर टाइम्स (हेमंत जैन) के बैनर तले ग्रेटर बाबा परिसर में सम्पन्न होगा । इनकी इस असाधारण पहल के लिए गोलालारीय समाज भूरि भूरि प्रशंसा करती हैं। इस सार्थक पहल में सहयोग देते हुए समाज की ओर से वधु पक्ष को 5000/– रुपये की राशि का उपहार देने का प्रस्ताव दिया गया हैं। इसी तरह की पहल कुछ समय पहले उज्जैन के निकट स्थित तमोभूमि में भी की गयी हैं। यहां भी सवा लाख रुपए में विवाह की सारी व्यवस्था की जा रही हैं। महाराष्ट्र में अनेक जैन संगठनों द्वारा यह कार्य काफी समय से किया जा रहा है । इस तरह के आयोजन सभी तीर्थ स्थानों पर होने चाहिए और समाज के कमजोर परिवारों की मदद के लिए समर्थ लोगों को आगे आना चाहिए । इन्दौर जैन सामाजिक संसद के महामंत्री श्री राजकुमार पाटोदी ने एक कदम और आगे बढ़कर घोषणा की कि जो परिवार सवा लाख रुपये की व्यवस्था करने में भी सक्षम न हों उनके लिए समाज व्यवस्था करेगा। यह पहल और भी स्वागत योग्य हैं। **– सहसंपादिका अनुपमा जैन**

सादगी पूर्ण विवाह सम्पन्न करने की एक सार्थक पहल देखने को मिली जब अजमेर के श्री अभिषेक जैन और सुश्री सोनी जैन द्वारा बगैर दहेज और तामझाम के सोनी जी की नसिया में देव प्रतिमा के समक्ष विवाह किया गया । 108 श्री सुधासागर जी और प्रमाण सागरजी महाराज की प्रेरणा से इस युगल ने यह अद्भुत मिसाल समाज के सामने प्रस्तुत की। इस विवाह में भोजन सादगी पूर्ण सीमित व्यंजन के साथ पंक्ति में बिठाकर परोसा गया। जूठन नही छोड़ने का आव्हान किया गया। अनावश्यक फिजूलखर्ची रोकने के लिए महंगे मैरिज गार्डन, महिला संगीत, रात्रि विवाह आदि का बहिष्कार किया गया।

विवाह योग्य युवक युवतियों का परिचय पुस्तिका 'प्रयास' रिश्तों को जोड़ने का... के द्वितीय अंक का प्रकाशन अगस्त 2017 में किया जावेगा । इस पत्रिका के लिए हम क्षेत्रीय प्रतिनिधियों के माध्यम से जून 2017 से बायोडाटा प्रविष्टि फार्म व अन्य जानकारियां आप तक पहुंचायी जायेगी । प्रविष्टि फार्म सशुल्क जमा करने की अंतिम तिथि 31 जुलाई 2017 रहेगी । पुस्तिका का प्रकाशन 31 अगस्त तक कर अंक को आपको पहुंचा दिया जावेगा । हमारा प्रयास है कि दीपावली पश्चात विवाह का आगामी सत्र प्रारंभ होने के पूर्व ही इस पत्रिका के माध्यम से आप योग्य प्रत्याशियों की जानकारी प्राप्त कर बातचीत की रुपरेखा बना सके । संपर्क सूत्र – 9406744064, 9329524227, 9425903301, 9424013136

गोलालारीय दर्शन समाज के 4200 परिवारों तक नियमित भेजा जा रहा है । संभव है डाक व्यवस्था या आपका पता सही न होने के कारण पत्रिका आपको व आपके रिश्तेदारों तक पत्रिका नहीं पहुंचती है तो उनका नाम व पता पोस्टकार्ड पर लिखकर पत्रिका कार्यालय पर भेज देवें या 9424013136 पर दोप. 4 से रात्रि 10 तक संपर्क कर सकते है या अपना पोस्टल एड्रेस वाट्सएप्प या एसएमएस पर भेज सकते है ।

परामर्श प्रमुख

श्री कैलाशचंदजी जैन, झाँसी
श्री जिनेन्द्रकुमारजी जैन, अहमदाबाद
डॉ. श्रेयांस कुमार जैन, बड़ौत
प्रधान संपादक
सिंघई राजेन्द्र जैन, 9407453066
सह संपादिका
श्रीमती अर्चना अजय जैन, 9827796013
श्रीमती अनुपमा रजनीश जैन, 9009066884
कोषाध्यक्ष -
सुधेश कुमार जैन, 9827254111
प्रबंध संपादक
राजेन्द्र कुमार जैन, सायकलवाले, 9425353972
खुशालचन्द जैन, 9302123879
कोमलंचद जैन, 9329524227
(संयोजक एवं प्रकाशक)
बाहुबली जैन, 9827247847
*** विशेष सहयोगी ***
श्री प्रदीपकुमार कमलाप्रसाद जैन, मणी नगर
श्री मुन्नालाल मुकेशकुमार जैन, पिपरा
*** सहयोगी सदस्य ***
श्री अजीतकुमार रतनचंद जैन, विदिशा
श्री अनिलकुमार प्रेमचंद जैन, अहमदाबाद

शिरोमणि संरक्षक, परम संरक्षक अपना संक्षिप्त परिचय सपत्नीक फोटो सहित एवं संरक्षक तथा विशेष सहयोगी सदस्य अपना संक्षिप्त परिचय फोटो सहित भेजे ताकि प्रकाशन किया जा सके।

सदस्यता शुल्क

शिरोमणि संरक्षक (अ.जा.)	21000/-
परम संरक्षक (अ.जा.)	11000/-
संरक्षक (अ.जा.)	5100/-
विशेष सहयोगी (अ.जा.)	2100/-
सहयोगी सदस्य	1100/-
सहयोग राशि	500/-

आप 'गोलालारीय दर्शन' के बैंक खाते में सहयोग राशि स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के खाता क्रं. 63048875855
IFSC Code: SBIN0030134
में चेक द्वारा ही जमा कर स्लीप की फोटोकॉपी व अपना नवीन फोटो मय जानकारी के हीरालाल एण्ड संस, 16 महारानी रोड व कार्यालय पते पर अवश्य भेजें ताकि आपको रसीद भेज कर आपका विवरण प्रकाशित किया जा सके।
नोट - 8 मार्च 2014 से अन्य शहरों से जमा की जाने वाली राशी पर बैंक शुल्क न्यूनतम 50 रु. कर दिया है।

अत: बायोडाटा शुल्क मल्टीसिटी चेक के द्वारा ही पत्रिका के पते पर भेजे।

विज्ञापन दर (कलर)

अंतिम पेज	15000/-
फुल पेज (अंदर)	11000/-
1/2 पेज	5000/-
1/4 पेज	3000/-
मांगलिक बधाई फोटो सहित	2000/-
शोक संदेश फोटो सहित	1000/-
बॉयोडाटा फोटो सहित	300/-

बायोडाटा, समाचार व अन्य कोई जानकारी पत्रिका में प्रकाशित करने हेतु गोलालारीय दर्शन 64, न्यू देवास रोड़, इन्दौर अथवा श्री राजेन्द्रकुमार जैन हीरालाल एण्ड संस, 16 महारानी रोड़, इन्दौर पर भेंजे।

अपने ज्ञान का उपयोग समाज के कल्याण के लिए करें -

प्रदीपकुमार जैन, भोपाल । अपने ज्ञान का उपयोग आत्म कल्याण में करो । जीवन का विकास करना है तो गुणग्राही बनो । जीव जितने भी पाप करता है, तन से नहीं मन से करता है, क्योंकि मन की गति तन की गति से कहीं ज्यादा अधिक है । मन की मनमानी पर अंकुश और चंचल चित्त पर जिस दिन रोक लगाना सीख लोगे, तो जगत में भटकना समाप्त हो जायेगा । स्वयं कल्याण के साथ समाज कल्याण की भावना हमारे अंदर होना चाहिये ताकि समाज का हर वर्ग उन्नत हो सके । यह सद्विचार आचार्य श्री 108 विशुद्धसागरजी महाराज ने नेहरु नगर, भोपाल में चल रहे श्री 1008 मज्जिनेन्द्र रत्नमयी चौबीसी जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव की धर्मसभा में व्यक्त किये । पंचकल्याण में आयोजित प्रवचन श्रृंखला में आचार्य श्री ने कहा गिरगिट को बदनाम मत करो, वह तो एक दो बार ही रंग बदलता है लेकिन आप स्वयं अपने भावों से मिलोगे तो यह देखोगे कि हम कितनी बार भावों का रंग बदलते है । मंदिर में रहकर भी जीव मंदिर में नहीं मिलेगा । मात्र कुछ समय ही अपने स्वयं के अंदर प्रवेश कर जाओ तो मोक्ष मिल जायेगा। उन्होंने कहा कि भरे हुए को दुनिया भरती है, खाली को कोई नहीं । इसी तरह उठे हुए को ही दुनिया उठाती है लेकिन गिरे हुए को कोई नहीं उठाता । भरे हुए कलश में ही लोग नेग दस्तूर करते है। साधना के क्षेत्र में प्रशंसा अवरोधक का काम करती है इसीलिये हे जीव न प्रशंसा मे फूलना, न निंदा में कूलना, दोनों क्षणिक है । ज्ञानी जीव सदा मध्यस्थ रहता है । स्वयं के भावों को संभाल लोंगे तो भगवान बन जाओगे ।

नेहरु नगर में स्थित वर्तमान जिनालय का निर्माण अनेक बाधाओं को पार कर किया गया है । पहले देव दर्शन की अस्थाई व्यवस्था प्लॉट नंबर बी.एम. 187 में हुआ करती थी। उस समय लगभग 20-25 परिवार मंदिरजी से जुड़े हुए थे। कुछ ही दिनों के पश्चात् वर्तमान प्रांगण में समाज के लोगों ने मिलकर टेंट लगाकर श्रीजी की स्थापना कर दी । चूँकि मामला सामाजिक होनें से आसपास रहवासियों द्वारा भारी विरोध किया गया, अनेको बार तोड़-फोड़ होने के कारण सभी परिवारों ने सुरक्षा की दृष्टि से बारी-बारी से ड्यूटी देते थे। कुछ समय पश्चात 10×10 की जगह में टीन की चारदीवारी बनाई व देव दर्शन व्यवस्था को सुगम बनाया । इस तरह की सभी व्यवस्था बनाने में तथा 'वीतराग दर्शनालय समिति' बनाकर उपनियम तैयार कर संस्था को रजिस्टर्ड कराने में स्वर्गीय श्री एम.एल.जैन (सेवानिवृत्त पासपोर्ट अधिकारी) की मुख्य भूमिका रही। समय निकलता रहा समाज के लोगो ने मिलकर लोहे के पिलर एवं शीट का एक बड़ा शेड बनाकर तैयार करवाया । इस तरह रातों-रात बिना मजदूरों के समाज के पुरुषों, महिलाओं व बच्चों आदि ने मिलकर शेड को खड़ा कर एक हाल का रूप दे दिया। शनैः-शनैः नए परिवारों की संख्या बढ़ती चली गई, परिसर भी नया रूप लेने लगा। कालांतर में एक जीवट पूज्य मुनिश्री 108 विमदसागरजी महाराज का नेहरू नगर मंदिरजी में आगमन हुआ जिससे समाज में अत्यन्त धर्म प्रभावना हुई और शिखरबद्ध मंदिरजी के निर्माण की भावना प्रबल हुई। हम सभी के पुण्य उदय से कुछ समय पश्चात् पूज्य मुनिश्री 108 विशुद्धसागरजी महाराज का मंगल आगमन हुआ । उनके पावन सान्निध्य में 21 अक्टूबर, 2002, शरद पूर्णिमा के दिन तीन खण्ड के शिखरबद्ध मंदिरजी का शिलान्यास हुआ। दिसम्बर, 2002 में संत शिरोमणि आचार्य108 श्री विद्यासागरजी महाराज संसघ नेहरू नगर पधारे एवं तीन दिनों तक समाज ने भक्तिपूर्वक पूजा-अर्चना की एवं आहारचर्या कराकर पुण्यार्जन किया। आचार्य श्री ने परिसर को तीर्थ की उपमा दी । वर्ष 2012 महावीर जयंती के पुनीत अवसर पर श्री वर्धमान महावीर औषधालय का शुभारंभ हुआ जो कि निश्चित ही सामाजिक हित की उत्कृष्ट भावना प्रकट करता हैं। निरंतर बढ़ते परिवार एवं धर्मावलंबियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए, प्रथम तल के विस्तार की योजना बनाई जिसमें निर्माण कमेटी संयोजक इंजीनियर श्री महेन्द्र जैन (लघु उद्योग निगम) की टीम ने सहयोग कर कार्य सम्पन्न कराया । सानंद संपन्न हुए पंचकल्याणक महोत्सव में भोजनशाला के प्रमुख संयोजक श्री प्रदीपकुमार जैन एलआयसी रहे । आपने दो बार महामंत्री के रुप में अपना दायित्व निभाया है । आपके साथ भोपाल गोलालारीय समाज अध्यक्ष प्रदीपकुमार जैन नौहरकलांवालों ने 1 लाख की राशि इस प्रयोजन हेतु दान की व श्री एन.के. जैन कोटरा का विशेष योगदान रहा ।

श्री सिद्धचक्र 64 महामंडल विधान सानंद संपन्न ।

शांतिकुमार जैन, गंजबासौदा । श्री सिद्धचक्र 64 महामंडल विधान का विशाल आयोजन तारण तरण पाठशाला में मुनि श्री 108 कुन्थुनाथ सागरजी महाराज एवं श्री क्षुल्लक 105 हर्षित सागरजी महाराज के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ । प्रतिदिन अभिषेक, शांतिधारा व नित्य नियम पूजन के बाद सिद्धचक्र महामंडल विधान प्रारंभ होकर तत्पश्चात मुनिश्री के प्रवचनों का लाभ मिलता था । 25 दिसम्बर को मुनि संघ का पिच्छिका परिवर्तन समारोह मनाया गया । इस विशाल धार्मिक आयोजन के समापन पर धूसरपुरा स्थित पार्श्वनाथ दि. जैन मंदिर से विशाल शोभा यात्रा निकाली गई जिसमें गजरथ के साथ 64 विमानों में श्री जी को विराजमान कर नगर परिक्रमा कराई गई ।

इस शोभा यात्रा में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं के साथ मुनि संघ का चल समारोह भी निकला। नगर परिक्रमा में गजरथ पर श्रीजी को विराजमान कर मुख्य पात्र इन्द्र-इन्द्राणियों की वेशभूषा में सपरिवार सवार थे, उनके पीछे 64 विमानों को केसरिया वेशभूषा से सजे इन्द्र कंधे पर लेकर पैदल विहार करते हुए चल रहे थे। रथों में सौधर्म इन्द्र, ईशान इन्द्र, सनतकुमार इन्द्र, माहेन्द्र इन्द्र एवं उपेन्द्र सपरिवार श्रीजी को साथ लेकर सवार थे।

इस विशाल आयोजन में नगर व आस पास के क्षेत्रों से बड़ी संख्या में जैन धर्मालु आयोजन में शामिल हुए। सभी कार्यक्रम आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज के आशीर्वाद से मुनि श्री 108 कुन्थुसागरजी महाराज क्षुल्लक 105 हर्षितसागरजी महाराज के मार्ग दर्शन और बा.ब्र. धीरज भैया राहतगढ़ व राजेश भैया टडा के निर्देशन में सम्पन्न हुये।

सांस्कृतिक कार्यक्रम के दौरान दिल्ली से पधारे प्रसिद्ध कलाकार मनोज शर्मा ग्रुप द्वारा ज्ञानवर्द्धक नाटिकाओं का सफल मंचन किया गया। ऐसा अनूठा कार्यक्रम गंजबासौदा के इतिहास में प्रथम बार सम्पन्न हुआ हैं ।

गोलालारीय दर्शन के शिरोमणी संरक्षक, परम संरक्षक, संरक्षक, विशेष सहयोगी व सदस्यों के नाम आगामी अंको में सुविधानुसार प्रकाशित किए जावेगें। इस संदर्भ में आपसे सादर अनुरोध हैं कि आपने गोलालारीय दर्शन पत्रिका में सदस्यता हेतु राशि जमा कराई हैं तो उसका विवरण पेपर के स्टीकर पर अंकित रहता हैं यदि इस स्टीकर में किसी प्रकार की त्रुटि हैं तो आप 9424013136 पर चर्चा कर सुधार करा सकते हैं। चर्चा के समय स्टीकर पर अंकित सदस्यता क्रमांक अवश्य बताएं।

बधाई

* **सुश्री बहार जैन** पुत्री इंजी. बसन्त कुमार जैन भोपाल, पौत्री स्व. श्री परबचन्द जैन, विधायक, स्वतंत्रता सेनानी औबेदुल्लागंज, को यू.एन.ओ. द्वारा न्यूयार्क में यूथ असेम्बली में फरवरी 2017 के प्रथम सप्ताह में सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोले विषय पर अपना पेपर प्रस्तुत करने के लिए आमंत्रित किया गया ।

* नसीराबाद (अजमेर) के इतिहास में पहली बार हुए पंच कल्याणक जो आचार्य विद्यासागरजी महाराज के शिष्य मुनि श्री प्रमाण सागरजी, मुनि श्री उत्तम सागरजी, मुनि श्री विराटसागरजी महाराज के सानिध्य में सानंद हुआ। जिसमें ललितपुर निवासी **श्री नवीन-क्रांति जैन (चूना वाले)** ने कामदेव बाहुबली के मुख्य पात्र के रुप में धर्मलाभ अर्जित किया ।

* जनवरी माह में सम्पन्न हुई नेशनल स्कूल चेस चैंपियनशीप 2017 में अंडर-13 गर्ल्स में 13 वर्षीय **नित्यता जैन** 1671 अंतरराष्ट्रीय फिडे रेटिंग प्राप्त शतरंज खिलाड़ी एवं म.प्र. की सीनियर महिला शतरंज चैंपियन ने नए साल का स्वागत करते हुए भारत में पाँचवा स्थान प्राप्त किया।

* श्रवणबेलगोला महामस्तकाभिषेक महोत्सव में **डॉ. श्रेयांसकुमार जैन** संरक्षक बनाये गये हैं। डॉ. जैन अखिल भारत वर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्री परिषद् के अध्यक्ष हैं और जैन समाज के श्रेष्ठ विद्वान हैं। ये सदैव धार्मिक कार्यों को कुशलता पूर्वक कराने में कुशल हैं। आप गोलालारीय दर्शन के परामर्श प्रमुख है ।

* **श्री राजेश जैन,** भोपाल को श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन श्रुत संवर्धिनी महासभा, नई दिल्ली के द्वारा भोपाल संभाग में संयुक्त मंत्री के रुप में नियुक्त किया गया है । आप भोपाल संभाग में संस्थान के कार्यालय को संचालित कर महासभा के संगठन को मजबूत करने के लिए समाज के प्रत्येक वर्ग को संगठन से जोड़ने हेतु प्रेरित करेंगे ।

इन्दौर के पूर्वोत्तर क्षेत्र में स्थित महालक्ष्मी नगर में पंचकल्याणक वेदी प्रतिष्ठा कार्यक्रम 108 आचार्य श्री पुष्पदंतसागरजी महाराज और उनके संघस्थ शिष्य श्री प्रज्ञासागरजी, प्रणामसागर एवं पूज्यसागरजी महाराज के मार्गदर्शन में संपन्न हुआ । प्रतिदिन नित्य पूजन के पश्चात गर्भकल्याणक, जन्मकल्याणक, तपकल्याणक, ज्ञानकल्याणक व मोक्षकल्याणक आदि क्रियाएं सानंद संपन्न हुयी । आचार्य गुरुवर का मंगल प्रवचन तथा सांयकाल भजन आरती पश्चात सांस्कृतिक कार्यक्रमों में समाजजनों ने बढ़चढ़कर हिस्सा लिया । इसी क्रम में **श्री निर्मलकुमार-सुनीता जैन सिवनीवालों** और **श्रीमती चंदा -स्व. श्री नरेन्द्रकुमार जैन साइकल वाले के सुपौत्र व श्री निशांत-रेशू जैन सनसिटी, इन्दौर के सुपुत्र मा. चिदेश जैन की ओर से भगवान महावीर स्वामी की प्रतिमा विराजमान करायी गयी ।**

नागपुर समाज का चुनाव सर्वानुमति से संपन्न

प्रकाशचंद जैन, नागपुर । श्री गोलालारीय दि. जैन समाज की संस्था "श्री बाहुबली बहुउद्देश्यीय संस्थान" के त्रिवार्षिक चुनाव सर्वसम्मति से संपन्न हुए । जिसमें मार्गदर्शक मंडल के अलावा नवीन कार्यकारिणी का चयन सर्वानुमति से किया गया । मार्गदर्शक मंडल में डॉ. राजेन्द्रप्रसाद जैन, श्री नेमीचंद जैन, श्री शीतलप्रसाद जैन, श्री सुरेशचंद जैन, श्री वीरेन्द्रकुमार जैन रेलवे का चयन किया गया

संस्था के निर्वाचित कार्यकारिणी में अध्यक्ष श्री अनिलकुमार जैन VSR , उपाध्यक्ष श्री राजेश रामदासजी जैन, सचिव श्री प्रकाश फूलचंद जैन कुरवाईवाले, कोषाध्यक्ष श्री अमित जैन लक्की, सहसचिव श्री विकास नरेश जैन व कार्यकारिणी सदस्य के रुप में श्री सुभाष बाबूलाल जैन, डॉ. कपिल मदनलाल जैन, श्री निकेश विमलकुमार जैन, श्री संतोषकुमार जैन विदिशावाले व श्री अमित नेमीचंद जैन चयनित हुये ।

अध्यक्ष

उपाध्यक्ष

सचिव

सहसचिव

कार्यकारिणी सदस्य

डॉ. पंकज जैन राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित

अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (एआईसीटीइ) नई दिल्ली द्वारा हिंदी में तकनीकी पाठ्य पुस्तक को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित तकनीकी पाठ्य पुस्तक पुरस्कार योजना के तहत शासकीय महिला पॉलीटेक्निक महाविद्यालय में विभागाध्यक्ष पद पर पदस्थ डॉ. पंकज जैन द्वारा लिखित पाठ्य पुस्तक वित्तीय लेखांकन को राष्ट्रीय स्तर का पुरस्कार प्राप्त हुआ हैं। पुरस्कार के तहत डॉ. पंकज जैन को नई दिल्ली में आयोजित समारोह में 21 हजार रुपए की नकद राशि प्रदान कर सम्मानित किया गया । डॉ. पंकज जैन की लिखित 10 पाठ्य पुस्तकों का अभी तक प्रकाशन हो चुका हैं। इसके पूर्व व्यवसायिक अर्थशास्त्र को भी म.प्र. शासन चयनित कर प्रकाशित कर चुका हैं।

* श्री सुशांत सुराणा ने चार्टर्ड अकाउंटेंट की परीक्षा उत्तीर्ण कर डिग्री प्राप्त की है । आप झालावाड़ में स्वयं की चार्टर्ड अकाउण्टेंट कंपनी संचालित कर रहे है । आप राजेश सुनीता जैन 'सायकलवालों' इन्दौर के दामाद है ।

सिरोंज में विमानोत्सव धूमधाम से संपन्न

अंकित सेठ, सिरोंज । सकल दिगंबर जैन समाज ने विमानोत्सव पर्व धूमधाम से मनाया। नगर के मुख्य बाजार में विमान निकाले गए। वार्षिक अधिवेशन का आयोजन भी किया गया। नगर के सभी जैन मंदिरों में श्रीजी का विशेष अभिषेक एवं पूजन किया गया । कठाली बाजार स्थित जिनालय में विमानोत्सव की शुरुआत हुई। जिसकी अगवानी महापुरुषों के स्वरूप में सजी बालिकाओं द्वारा की जा रही थी। साथ में चल रहे युवाओं के हाथों में तिरंगा तथा जैन समाज का ध्वज था इसके उपरांत जैन समाज की पाठशालाओं की बहनें तथा समाज की महिलाएं कतारबद्ध होकर चल रही थीं।

विमानोत्सव का सबसे मुख्य आकर्षण दिगम्बर जैन नवयुवक मंडल तथा जागृति मंडल के दिव्यघोष थे। आकर्षक वेशभूषा में सजे दोनो ही मंडल के सदस्यों द्वारा सुमधुर दिव्यघोष वादन किया जा रहा था। इसके उपरांत समाज के वरिष्ठ एवं युवा सदस्य चाँदी का विमान लेकर चल रहे थे।

इस विमान में श्रीजी की प्रतिमा को स्थापित किया गया था। यह विमान नगर के मुख्य मार्गों, हाजीपुर तथा लिंक रोड होते हुए वापस कठाली बाजार आकर थमा । इसके उपरांत आरोन रोड स्थित अतिशय तीर्थ नसियाजी पर वार्षिक अधिवेशन का आयोजन हुआ। इसमें सकल जैन समाज के लोग शामिल हुए।

महावीर जयंती

आगामी महावीर जयंती के सचित्र समाचार 20 अप्रैल तक हमारे वाट्सएप्प नंबर या ईमेल पते पर भेजे ताकि प्रकाशन किया जा सके ।

भोपाल गोलालारीय समाज का स्नेह सम्मेलन 26 मार्च को

राजेश जैन, भोपाल । श्री दि. जैन गोलालारीय समाज भोपाल द्वारा 26 मार्च 2017 को वार्षिक मिलन समारोह '**होली मिलन**' का आयोजन तुलसी मानस प्रतिष्ठान, मानस भवन, पोलीटेक्निक चौराहा, भोपाल पर रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमों के बीच समाज के प्रतिष्ठित व्यक्तित्वों का सम्मान कर वार्षिक प्रतिवेदन के साथ आयोजित किया जाना है । समाज द्वारा विधिवत आमंत्रण पत्र समाजजनों को प्रेषित किये जा रहे है । भोपाल में निवासरत नवीन सदस्य अधिक जानकारी के लिए राजेश जैन 9302935645 पर संपर्क कर अधिक जानकारी प्राप्त कर सकते है ।

गोलालारीय समाज के प्रत्येक परिवार को हम गोलालारीय दर्शन पत्रिका भेजने के लिए कृत संकल्पित हैं हमारा सदैव प्रयास रहता हैं कि आप तक पत्रिका नियमित पहुंचे। डाक व्यवस्था के कारण यदि आप तक पत्रिका नही पहुंच पाती हैं तो अपना पूर्ण पता मोबाइल नम्बर सहित पत्रिका के वॉटसएप नं. 94067-44064 पर भेजे। आप अपने नाते रिश्तेदारों या अन्य नगर में नौकरी या व्यापार कर रहे अपनें बच्चों के पते व मोबाइल नंबर हमें भेजे ताकि उनको भी पत्रिका प्रेषित की जा सके। यदि आप तक पत्रिका नहीं पहुंच रही है तो आप अपने शहर के किसी ऐसे सदस्य का नाम देवें जिसके यहां पत्रिका पहुंच रही है।

बच्चों की परवरिश एक चुनौती

हाल ही में घटी कुछ घटनाओं ने सोचने को विवश कर दिया कि क्या वाकई हमारे बच्चे वही बन रहे हैं जो हम उन्हें बनाना चाहते हैं। वैसे तो हर माँ बाप अपने बच्चे के लिए एक अच्छे भविष्य का सपना देखते हैं। परंतु हमारे किशोर और युवा आज जिस तरह की घटनाओं को अंजाम दे रहे हैं उससे तो यही सवाल उठता हैं कि क्या बच्चों की परवरिश ठीक से हो रही हैं? लड़कियों से छेड़छाड़, दुष्कर्म जैसे घिनौने अपराध हो या आपसी लड़ाई झगड़े में चाकूबाजी जैसे संगीन अपराध, यहां तक कि दोस्तों के अपहरण और हत्या जैसे दुष्कृत्यों में भी किशोरों का हाथ होने की खबरें आये दिन अखबारों की सुर्खियां बनती हैं। किशोर वय के ये अपराधी कई बार अच्छे, सम्पन्न और पढ़े लिखे परिवारों के बच्चे होते हैं। कई के माँ बाप ऊंचे ओहदों के इज्जतदार लोग होते हैं। कितनी ही बार ये बच्चे खुद भी नामी स्कूलों के छात्र होते हैं। फिर क्या कारण हैं कि बच्चे इस तरह की गलत वारदातों को अंजाम दे रहे हैं । बात की तह तक जाने पर एक बात बहुत साफ तौर पर निकल कर आती हैं कि कहीं न कहीं बच्चों की परवरिश में भारी कमी हैं। माता पिता आज बच्चों को अच्छा घर, कपड़े, खेल खिलौने और हर संभव सुख सुविधाये दे रहे हैं। यथाशक्ति अच्छे स्कूल, कोचिंग आदि में प्रवेश दिलाकर अपनी जिम्मेदारी को पूर्ण समझ लेते हैं । कामकाजी हों या घरेलू, माता पिता के पास बच्चों के लिए समय ही नहीं हैं। स्कूल के बाद बच्चा क्या कर रहा हैं, कहाँ, किसके साथ आ जा रहा हैं। उसकी संगति कैसे बच्चों से हैं। घर पर पढ़ाई के बहाने टीवी या इंटरनेट पर क्या देख रहा हैं, इसकी जानकारी रखना आवश्यक नहीं समझते। विशेष तौर पर लड़कों के बारे में तो अधिकांश माता पिता बिल्कुल ही बेपरवाह होते हैं। यहां तक कि कई परिवारों में तो लड़कों को किसी भी तरह की रोकटोक को बुरा माना जाता हैं। हां लड़कियों पर बिना वजह प्रतिबंध लगाये जाते हैं पर लड़कों को खुली छूट हैं वो कहीं भी आएं जाएं, कितनी भी देर रात तक घर आएं आदि आदि।

एक और कमी लड़कों में नैतिक शिक्षा और संस्कारों की हैं। वास्तव में आज भी अनेक घरों में यही माहौल हैं कि नैतिक शिक्षा और संस्कारों की आवश्यकता केवल लड़कियों को ही हैं, लड़कों को इसकी कोई जरूरत नहीं । क्या माँ बाप की यह सोच सही हैं? हमारे पुरुष प्रधान परिवारों में लड़कों को शुरू से ही घर की महिलाओं यानी माँ या बहनों पर रौब जमाने का विशेषाधिकार मिला होता हैं। उस पर भी अफसोस की बात यह हैं कि अधिकांश घरों में महिलाओं का सम्मान नहीं किया जाता। बच्चों के सामने ही पिता उनकी माँ का अपमान करते हैं और दुर्व्यवहार करते हैं। कई परिवारों में बेटे बेटियों में भेदभाव किया जाता हैं। आज भी हमारे समाज में महिलाओं का स्थान शोषित और पुरुषों का शोषण कर्ता के रूप में ही बना हुआ हैं। ये सब न केवल कम शिक्षित और उच्च शिक्षित, ग्रामीण और शहरी, सभी तरह के परिवारों में सामान्य हैं। परिणाम स्वरूप लड़कों के मन में बचपन से ही महिलाओं के प्रति दोयम दर्जे का व्यवहार करने की मानसिकता दृढ़ हो जाती हैं। मौका पाते ही वे छेड़छाड़ या दुष्कर्म जैसे अपराध करने से भी नही चूकते।

किशोरों द्वारा लूट, चोरी जैसे अपराध भी बहुत सामान्य हैं। इसके पीछे कई बार आर्थिक कठिनाईयों से ज्यादा उनकी बढ़ती हुई महत्वाकांक्षाएं ही होती हैं। आज के भौतिकवादी युग में हर कोई पैसे की ओर भाग रहा हैं। किशोर और युवा किसी भी तरह तेजी से खूब सारा धन पाना चाहते हैं। छोटे गांवों से पढ़ने या काम की तलाश में आये किशोरों को बड़े शहरों का ग्लैमर और चकाचौंध आकर्षित करता हैं। किसी भी तरह और जल्दी से अमीर बनने की चाहत किशोरों को अपराध की दुनिया में खींच लाती हैं। इसके साथ ही हमारे देश का कानून किशोरों और नाबालिगों के प्रति कुछ ज्यादा ही नरम हैं जिसका फायदा आज के तथाकथित स्मार्ट किशोर उठाकर कठोर सजा से बच जाते हैं साथ ही ऐसे उदाहरणों से दूसरों में भी सजा का डर जाता रहता हैं।

बच्चों को स्मार्ट बनाने वाला मोबाइल और इंटरनेट भी अपराध करने में एक हद तक जिम्मेदार हैं। आज का किशोर इंटरनेट की दुनिया में वो सब कुछ पा लेता हैं जो कभी कल्पनाओं में भी नहीं होता था । जोश, उत्तेजना, रोमांच और तरह तरह की चुनौतियों से भरी यह दुनिया बच्चों के अबोध मन पर गहरा प्रभाव डालती हैं। और बच्चे भी कुछ नया चुनौती पूर्ण करने की चाह में अनजाने ही ऐसी घटनाओं को अंजाम दे देते हैं ।

इन सब के साथ ही बच्चों में धार्मिक और नीतिगत शिक्षा का अभाव भी एक बहुत बड़ा कारण हैं कि बच्चे आज अच्छे बुरे का भेदभाव भूलते जा रहे हैं । आज माता पिता भी बच्चों में धार्मिक एवं नैतिक संस्कार देने में असफल हो रहे है । एकल परिवारों में रहने के कारण बुजुर्गों से मिलने वाली इस अमूल्य संपदा से बच्चे वंचित हो रहे है । संस्कार के अभाव में वे अपनी जड़ों से दूर होते जा रहे हैं । इसका दुष्परिणाम हमारे सामने है । प्रेम, शालीनता, सहनशीलता, सामंजस्य व महिलाओं का सम्मान आदि गुणों का महत्व कम होता जा रहा है इसके स्थान पर उनमें ईर्ष्या, द्वेष, स्वार्थपरता, आगे बढ़ने की होड़ हो रही है । कोई भी एक दिन में अपराधी नहीं बन जाता है । बचपन से ही छोटी मोटी बदमाशियाँ शुरु होती है । जो माता पिता के अति लाड़ प्यार वश नजर अंदाज करने के कारण धीरे धीरे बड़े अपराधों में बदल जाते हैं। वास्तव में आज के वातावरण में बच्चों का लालन पालन माता पिता के लिए किसी चुनौती से कम नहीं हैं। इसके लिए अपने बच्चों को भौतिक सुविधाओं के अलावा समुचित समय देना भी आवश्यक हैं। उनकी दैनिक गतिविधियों पर नजर रखना जरूरी हैं। घर के बाहर ही नहीं, अंदर भी बच्चों के बिगड़ने के प्रचुर साधन मौजूद हैं। इसलिए माता पिता को हर पल सजग रहने की जरूरत हैं। बच्चों के जासूस न बन उनके दोस्त बनकर रहें और समय समय पर सलाहकार बनें। हमारे बच्चे हमारी अमूल्य धरोहर हैं। उनकी समुचित देखभाल करें और उनके भविष्य को उज्ज्वल बनाएं। **– सहसंपादिका अनुपमा जैन**

सोशल मीडिया से...

एक 6 वर्ष का लडका अपनी 4 वर्ष की छोटी बहन के साथ बाजार से जा रहा था अचानक से उसे लगा कि, उसकी बहन पीछे रह गयी हैं । वह रुका, पीछे मुड़कर देखा तो जाना कि, उसकी बहन एक खिलौने के दुकान के सामने खडी कोई चीज निहार रही हैं । लडका पीछे आता हैं और बहन से पूछता हैं, ''कुछ चाहिये तुम्हें?'' लडकी एक गुड़िया की तरफ उंगली उठाकर दिखाती हैं। बच्चा उसका हाथ पकडता हैं, एक जिम्मेदार बडे भाई की तरह अपनी बहन को वह गुड़िया देता हैं। बहन बहुत खुश हो जाती है । दुकानदार यह सब देख रहा था, बच्चे का प्रगल्भ व्यवहार देखकर आश्चर्यचकित भी हुआ.....

अब वह बच्चा बहन के साथ काउंटर पर आया और दुकानदार से पूछा, '' सर, कितनी कीमत है इस गुड़िया की?'' दुकानदार एक शांत और गहरा व्यक्ति था, उसने जीवन के कई उतार देखे थे, उन्होंने बड़े प्यार और अपनत्व से बच्चे से पूछा, ''बताओ बेटे, आप क्या दे सकते हो ??'' बच्चा अपनी जेब से वो सारी सीपें बाहर निकालकर दुकानदार को देता हैं जो उसने थोड़ी देर पहले बहन के साथ समुंदर किनारे से चुन चुन कर बीनी थी । दुकानदार वो सब लेकर यूँ गिनता हैं जैसे कोई पैसे गिन रहा हो। सीपें गिनकर वो बच्चे की तरफ देखने लगा तो बच्चा बोला, ''सर कुछ कम हैं क्या??''

दुकानदार – ''नहीं–नहीं, ये तो इस गुड़िया की कीमत से भी ज्यादा हैं, ज्यादा मैं वापस देता हूँ'' यह कहकर उसने 4 सीपें रख ली और बाकी की बच्चे को वापिस दे दी । बच्चा बड़ी खुशी से वो सीपें जेब में रखकर बहन को साथ लेकर चला जाता है। यह सब उस दुकान का कामगार देख रहा था, उसने आश्चर्य से मालिक से पूछा, ''मालिक! इतनी महंगी गुड़िया आपने केवल 4 सीपों के बदले में दे दी ?''

दुकानदार एक स्मित संतुष्टि वाला हास्य करते हुये बोला, '' हमारे लिये ये केवल सीप हैं पर उस 6 साल के बच्चे के लिये अतिशय मूल्यवान हैं और अब इस उम्र में वो नहीं जानता, कि पैसे क्या होते हैं ? पर जब वह बडा होगा ना..... और जब उसे याद आयेगा कि उसने सीपों के बदले बहन को गुड़िया खरीदकर दी थी, तब उसे मेरी याद जरुर आयेगी, और फिर वह सोचेगा कि यह विश्व अच्छे मनुष्यों से भी भरा हुआ हैं। यही बात उसके अंदर सकारात्मक दृष्टिकोण बढाने में मदद करेगी और वो भी एक अच्छा इंसान बनने के लिये प्रेरित होगा।

*** रिशिका जैन, सनावद**

पत्र संपादक के नाम....

* आपकी पहल बहुत ही सराहनीय है समाज को ऐसे समाचार पत्र की बहुत ही जरुरत है जिसमें सभी प्रकार की खबरों का समावेश हो । वर्ग पहेली का प्रकाशन नियमित करे । परन्तु एक शिकायत है आपके अंक नियमित प्राप्त नहीं होते है, ऐसा क्यों। – शिखा जैन, सागर

* बायोडाटा विशेषांक बहुत ही अच्छा प्रयास है, विवाह योग्य बच्चों की जानकारियां संपूर्ण गोलालारीय समाज को नि:शुल्क पहुंचाने का आपका यह कदम अनुकरणीय है । विवाह योग्य बच्चों के परिवारों को बिना किसी मेहनत के जानकारियां प्राप्त हो रही है, इससे अच्छा कोई कार्य नहीं हो सकता है । – सीमा जैन, जबलपुर

संपादकीय उत्तर – हमारे द्वारा 4200 परिवारों को पत्रिका नियमित रुप से साधारण डाक के द्वारा प्रेषित की जाती है । प्रत्येक जिले के बंडल पृथक पृथक बनाकर डाक विभाग को सौंपे जाते है । डाक व्यवस्था के कारण पत्र नहीं पहुंचने पर अपने नगर के मुख्य डाक घर पर संपर्क कर पत्र नियमित होने के लिए आवेदन करें ।

जीवनसाथी का चयन कैसा व कैसे हो ?

हमारे देश में दाम्पत्य संबंध का अर्थ बहुत गहरा और व्यापक है, शादी यानि एक नये संसार में दस्तक ख़ासकर लड़कियों के लिये एक नया माहौल, नये लोग ।

शादी का रिश्ता, केवल सात फेरों या सात वचन लेने भर का नहीं, इस रिश्ते में कितनी ही अनकही, अबोली जिम्मेदारियां भी साथ आती है । जीवन साथी ही नहीं ससुराल से जुड़े हर पहलू की समझ रखना हिस्से में आ जाती है ।

विवाह एक संस्कार है जो दो दिलों को एक करता है, साथ ही दो परिवारों और कितने ही अन्य लोगों को रिश्तों की कड़ी में पिरोता है । हालांकि जिंदगी के सबसे हसीन पलों में से एक है शादी । कितने सपने होते है कुंआरे नयनों में, भावनाओं का उछाल, बेहद विश्वास, निश्छलता, कुछ अल्हड़ता ।

वैवाहिक संबंध मिले जुले अनुभवों और भावनाओं का संगम है इसमे जहां सुख दुख की धूप छांव है तो मिलन विछोह की कसक भी है, शादी संपूर्ण खट्टा नहीं, संपूर्ण मीठा नहीं । कुछ खट्टा, कुछ मीठा, कुछ चटपटा, कुछ कसैला भी है । यदि हम इसे केवल सुख की सेज मानकर या केवल कांटो का ताज मानकर चले तो दोनों ही गलत है, जहां इसमें शीतल बयार है तो तेज आंधियां और लू के थपेड़े भी है ।

प्रेम विवाह हो या परम्परागत विवाह या किसी आधुनिक पद्धति से किया गया विवाह अर्थात् लिव इन में रहने के बाद सब गुप चुप तरीके से किया गया या भागकर सजातीय या अंर्तजातीय लड़के और लड़की की पसंद और रुचि बहुत मायने रखती है ।

जब हम परिवार की इच्छा के विरुद्ध जाकर किसी दूसरी जाति या किसी दूसरे धर्म में अपना भविष्य देखते है तब बहुत सजगता और सतर्कता की आवश्यकता होती है क्योंकि तब आपका खानपान, आपका रहन सहन, आपके संस्कार, रीतियां, आपके आराध्य जिनसे आपका लगाव शैशवकाल से लेकर जवानी तक रहा, वह पूरा का पूरा एक झटके में बदल जाता है और यह चयन केवल आपका और आपका ही होता है । यदि गलत होता है तो इसमें भूल के लिये केवल दण्ड है, सुधार की कोई गुजाइंश नहीं बचती, ना ही आपके अपने साथ होते है । कुछ अपवादों को यदि छोड़ दें तो हर माता पिता की यही दिली इच्छा होती है कि वह अपने बच्चों को अच्छे से अच्छा जीवन साथी अपनी ही संस्कृति, संस्कारों और धार्मिक आस्थाओं वाला ढूँढ़ने में मदद करें ।

प्रायः युवा अपनी जवानी में ऐसी भूल कर जाते है कि उससे जिंदगी का सारा नक्शा ही बदल जाता है पर किसी का सही कदम जिंदगी का अक़्स संवार भी देता है ।

''जीवन में कुछ चीज़े कोमल तंतुओ से बंधी रहने पर सुंदरता को पाती है, जब उन्हें अधिकार की लोह श्रृंखला से बांधने का प्रयास किया जाता है तो वह बिखर जाती है और विवाह में ये बात शत प्रतिशत लागू होती है । यदि प्रेम विवाह हो रहा है तब लड़का और लड़की दोनों ही सपनों की एक अलग दुनिया, टीवी सीरियल, फिल्मों की संतरंगी कहानियों में विचरण कर रहे होते है ।

वे इस तथ्य को भूल जाते है कि जिंदगी टीवी का धारावाहिक नहीं, दाम्पत्य में केवल लव स्टोरी ही चलने वाली नहीं है । जीवन का ये गूढ़ सत्य है कि - **''मिल गया तो माटी जैसा, खो गया तो सोने जैसा''** । विवाह संबंध, प्रेम भावना, मित्र भावना के अतिरिक्त कुछ अन्य अस्पृश्य अनुभूतियों की जिम्मेदारियों का समूह भी है । भावी जीवन को सुखमय बनाने के लिए पहले से ही स्वयं को तैयार करना पड़ता है ।

किसी को केवल जानने मात्र से ज्यादा काम बनते नहीं क्योंकि जानना आसान है वरन् पहचानना मुश्किल है, जब दैनिक जीवन में अपने कर्त्तव्यों का निर्वहन पूरे लगन, अनुशासन के साथ परिवार के प्रत्येक व्यक्ति की कसौटी पर खरा उतर कर करना होता है तब सही पहचान होती है, तब हमारे अंदर से हूक नहीं उठनी चाहिये । कई बार हम मीठे मीठे प्रलोभनों में फंसकर किसी के दिखावे में उलझकर, केवल अपने भावनाओं के ज्वर में सिमटकर कुछ ऐसे कदम उठा लेते है, जिसके बाद हमारे लिए वापसी के सारे रास्ते बंद हो जाते है । हमारे परिजन केवल हमें बेबस देखते रहते है ।

विशेषकर लड़कियों से कहूंगी - पत्नी बनना एक चुनौती है, संघर्ष है, पत्नी बनकर किसी के साथ रहना, उसे प्यार करना, जटिल व्यक्तित्व एवं विचार धारा के साथ उसके संपर्णू रीति रिवाज, धार्मिक आस्थायें, खान पान और उससे जुड़े प्रत्येक व्यक्ति को जानकर उनके अनुरुप खुद को सिद्ध करना होता है जो अपने विपरीत हो तो बहुत मुश्किल है ।

पत्नी एक परख पट्टिका है एक ऐसी कसौटी जिसकी सहायता से पुरुष अपने विचार, आशा, सपने, महत्वकांक्षाये, समस्याएं, अंर्तद्वंद्व इत्यादि से निपटता है ।

विवाह अपने अस्तित्व की पहचान खोना नहीं । अपने साथी से साहस प्राप्त कर हम दुर्गम तथा असाध्य कार्यों को पूर्ण करने की क्षमता विकसित कर सकते है । इसका मतलब यह नहीं कि दोनों के शौक, दोनों के विचार एक होना चाहिये । सिक्के के दोनों तरफ का चित्र एक दूसरे से बिल्कुल मेल नहीं खाता, फिर भी दोनों में बुनियादी एकता होने की वजह से दोनों जीवनभर एक रहते है, आवश्यकता इस बात की नहीं कि दोनों के सब शौक एक हो, सब विचारों में समानता हो वरन् आवश्यकता इस बात की है कि एक के शौक से दूसरे को चिढ़ ना हो, असहनीय ना हो ।

मान लीजिये ऐसे लड़के से शादी कर ली जिसके घर में रोज रोज मांस पकता है, रोज शराब और सिगरेट का सेवन खुले आम होता है और दूसरी तरफ दूसरे को केवल यह सोचकर ही उल्टियां आने लगे तो क्या वहां जीवन बिताया जा सकता है ? कई बार हम जान बूझकर इतनी असमानताओं में घुस जाते है कि जीवन दुरुह और कष्टप्रद साध्य हो जाता है । इंसान सब कुछ सहन कर सकता है लेकिन जन्म जन्मांतरो के जो संस्कार चले आ रहे है वह उसे निरंतर मथते रहते है जिनसे वह अलग नहीं हो पाता । ये भी सच है कि प्रथाएं और परम्पराएँ समय के साथ बनती है, उसमें सुधार होता है, बिगड़ती भी है, प्रगतिशीलता इस संसार की जरुरत है । इसी कारण हमारी प्रथाओं, परम्पराओं में समय समय पर संशोधन और परिमार्जन हो रहा है लेकिन जो हमें सुख, शांति और स्थायित्व दे उन्हें तो हमें मानना ही चाहिए ।

आपसे ! अपने विचार प्रकट करने का एक ही उद्देश्य है कि हर शादी करने वाले का जीवन रेशमी, मधुर और स्थायी हो इसी में बंधन की शोभा है, सुख है । सार्थकता है इसी में बंधन का आनंद है ।

शादी जीवन का वो पायदान है जहां आप अपने जीवन साथी का साथ पाकर खिल सके, पल्लवित हो सके, संवर सके, अपनी प्रतिभा को खुला आसमां दे सके । इसलिए एक दूसरे का हाथ थामने से पहले सारे पहलुओं पर अच्छे से विचार करें, परिजनों के अनुभवों का अवश्य लाभ उठाये, हम भारतीय संस्कृति के पुरोधा है यहां ''ये नहीं तो वो, वो नहीं तो कोई और'' नहीं चलता है । शादी के पहले इसके बिना एक पल भी नहीं जी सकता । शादी के बाद इसके साथ एक पल भी नहीं जी सकता । मान लो हमने अपनी भूल सुधार के लिए बंधन तोड़ भी दिया तो आप परिजनों से, समाज से वो सम्मान और आदर कभी नहीं पा सकते जिसके आप हक़दार है क्योंकि यह आपका स्वयं का निर्णय था -

कई बार जिंदगी में ऐसी स्थिति बन जाती है कि ''तुम्हारे आने से सिर्फ इतना फर्क़ आया जिंदगी में, पहले अकेले तन्हा थे, अब तुम्हारे साथ तन्हा हूँ'', ''जीवन के सफर में जहां बहारों के मेले है, वहीं गमों के रेले भी है ।'' जिंदगी को प्रीत प्रीत करने के लिए स्वच्छ हो, धवल हो, करनी कथनी पर अमल हो, प्रगति की चाह में, विवाह की राह में, स्वजनों को लेकर साथ बढ़े चलो बढ़े चलो । दाम्पत्य में जुड़ने वाले सभी का जीवन सरल, सुखद, आनंदित हो ।

- साधना जैन, आकाशवाणी, भोपाल

लघु कथा

एक पिता ने अपनी बेटी की सगाई की, लड़का बड़े अच्छे घर से था तो पिता बहुत खुश हुए। लड़के ओर लड़के के माता पिता का स्वभाव बड़ा अच्छा था तो पिता के सिर से बड़ा बोझ उतर गया।

एक दिन शादी से पहले लड़के वालो ने लड़की के पिता को भोजन पर बुलाया । पिता की तबीयत ठीक नहीं थी फिर भी वह ना न कह सके । लड़के वालो ने बड़े ही आदर सत्कार से उनका स्वागत किया । फिर लडकी के पिता के लिए चाय आई शुगर की वजह से लडकी के पिता को चीनी वाली चाय से दूर रहने को कहा गया था ।

लेकिन लडकी के होने वाली ससुराल घर में थे तो चुप रह कर चाय हाथ में ले ली । चाय की पहली चुस्की लेते ही वो चोक से गये, चाय में चीनी बिल्कुल ही नहीं थी और इलायची भी डली हुई थी। वो सोच में पड़ गये की ये लोग भी हमारी जैसी ही चाय पीते हैं । दोपहर में खाना खाया वो भी बिल्कुल उनके घर जैसा, दोपहर में आराम करने के लिए दो तकिये पतली चादर।

उठते ही सोंफ का पानी पीने को दिया गया। वहाँ से विदा लेते समय उनसे रहा नहीं गया तो पुछ बैठे मुझे क्या खाना हैं, क्या पीना हैं, मेरी सेहत के लिए क्या अच्छा हैं? ये परफेक्टली आपको कैसे पता है ? तो बेटी की सास ने धीरे से कहा कि कल रात को ही आपकी बेटी का फोन आ गया था और उसने कहा कि मेरे पापा का स्वभाव से बडे सरल हैं बोलेंगे कुछ नहीं, प्लीज अगर हो सके तो आप उनका ध्यान रखियेगा । पिता की आंखों मे वहीं पानी आ गया था । लडकी के पिता जब अपने घर पहुँचे तो घर के हाल में लगी अपनी स्वर्गवासी माँ के फोटो से हार निकाल दिया।

जब पत्नी ने पूछा कि ये क्या कर रहे हो?? तो लडकी का पिता बोले-मेरा ध्यान रखने वाली मेरी माँ इस घर से कहीं नहीं गयी हैं, बल्कि वो तो मेरी बेटी के रुप में इस घर में ही रहती हैं। और फिर पिता की आंखों से आंसू झलक गये ओर वो फफक कर रो पड़े। दुनिया में सब कहते हैं ना! कि बेटी हैं, एक दिन इस घर को छोड़कर चली जायेगी । मगर मैं दुनिया के सभी माँ-बाप से ये कहना चाहता हूँ कि बेटी कभी भी अपने माँ-बाप के घर से नहीं जाती । बल्कि वो हमेशा उनके दिल में रहती हैं। दुनिया की सभी बेटियाँ को मेरा सादर प्रमाण । **-अवनी जैन, पुणे**

मानव जन्म

सोचो जरा करो मन में विचार, मानव जन्म नहीं हर बार।
क्यों तू आया है इस संसार में, क्या तूने पाया है इस संसार में।
कर ले प्रभु कि भक्ति, पा ले जन्म मरन से मुक्ति।
मोह माया के चक्कर में, तूने सारी लगा दी शक्ति।
भूल गया तू प्रभु को, तेरा जन्म गवार हुआ इस संसार में।
सोचो जरा करो मन में विचार, मानव जन्म नहीं हर बार
क्यों तू आया हैं इस संसार में, क्या तूने पाया हैं इस संसार में।।
दौलत खूब कमाई, पर की न किसी की भलाई ।
सब यही रहा जाये, संग तेरे न कौड़ी जाए ।
मस्त रहा व्यस्त रहा, अपने परिवार में इस संसार में।।
सोचो जरा करो मन में विचार, मानव जन्म नहीं हर बार।
क्यों तू आया है इस संसार में, क्या तूने पाया है इस संसार में।

– संजय जैन (मुंबई)

उठावने के दिन क्या तेरहवीं उचित है ?

समयाभाव का एक अत्यंत दुष्प्रभाव आज कल देखने में आ रहा है । परिवार के सदस्य की मृत्युपरांत परिवार व समाज के सदस्य उसका उठावना (तीसरा) व तेरहवां (पगड़ी रस्म) का कार्य एक ही दिन अर्थात उठावने के दिन ही करने लगे है । जो कि अत्यंत दोषपूर्ण और आगम विरुद्ध प्रथा है । प्रथम तो यह जिसके घर में यह दुखद घटना घटी है उस परिवार के सदस्य दुख से अभी उभर ही नहीं पाते है और उपर से तेरहवी (पगड़ी रस्म) की जिम्मेदारी उन पर आ जाती है, यह व्यवस्था उस परिवार और अधिक दुखी कर देती है । जैन आगम के अनुसार जब तक परिवार में सूतक है जब तक पगड़ी जैसी रस्मों का करा जाना उचित नहीं है । आजकल तो प्राय: देखने में आ रहा है कि मृत्यु के 24 घंटे के अंदर ही तीसरा व तेरहवीं की रस्म दोनो होने लगे है । आगम अनुसार तीन दिन तक खारी नहीं उठाना चाहिए क्योंकि अग्निकायिक जीवों की आयु भी तीन दिन तक की रहती है जबकि परिजन दूसरे दिन ही जाकर खारी उठा देते है जो आगम सम्मत नहीं है और उसी अशुद्ध अवस्था में परिजन भी मंदिर आ जाते है जो कि पूर्ण:त दोषपूर्ण व आगम विरुद्ध है । अत: ऐसी परम्परा की सभी समाजजनों को मुखर होकर विरुद्ध करना चाहिए और इसको समाप्त करने के लिए समाजजनों को मिलजुलकर आवश्यक कदम उठाना चाहिए ताकि इस कुप्रथा पर रोक लग सके अन्यथा वह दिन दूर नहीं कि सुबह चिता को अग्नि दी जावेगी, दोपहर में उठावना व शाम को तेरहवां (पगड़ी रस्म) कर दिया जावेगा । **आपके इस बारे में क्या विचार है, वे सादर आमंत्रित है ताकि एक निश्चित निर्णय पर पहुंचने में उपयोगी सिद्ध हो ।** **– प्रवीणकुमार जैन, विजय नगर, इन्दौर**

* विनम्र श्रद्धांजली *

* **श्री प्रमोदकुमार जैन** का देहांत 17 दिसम्बर को भोपाल में हो गया । 52 वर्षीय प्रमोद जैन की मौत के बाद उनके परिजनों ने उनकी स्किन दान कर दी । परिजन नेत्रदान भी करना चाहते थे, लेकिन ऑर्गन डोनेशन के लिए बनाए गए प्रोटोकाल के चलते नेत्र दान नहीं हो सका । भोपाल में अभी तक पांच लोगो के परिवार द्वारा ही स्किन दान हुआ हैं । जैन बैंक ऑफ इंडिया के कर्मचारी थे । उन्हे कार्डियक अरेस्ट के साथ ब्रेन हेमरेज हुआ था। उनके देहांत पश्चात उनके परिजनों ने स्किन और नेत्रदान करने की इच्छा जताई थी ।

* **श्री दयाचंदजी जैन करमौरावालों** का निधन 31 दिसम्बर को अहमदाबाद में हो गया । आप बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे। समाज सेवा का पथ बड़ा दुर्गम होता है, जिस पर आप निर्भीक, मृदुभाषी, संघर्ष के साथ किसी भी उलाहनों की परवाह न करते हुए समाज कार्यो में सतत संलग्न रहे । चतुर्विध जैन संघ की सेवा करना आपका प्रमुख गुण था। आजीवन धर्म और समाज को समर्पित, विशिष्ट संगठनों, तीर्थक्षेत्रों का विकास हो, समाज को प्रभावी दिशा देने की उनकी क्षमता सदैव अविस्मरणीय रहेगी। आप अ.भा. गोलालारीय परिषद के संरक्षक थे । आपके मन में गोलालारीय समाज की उन्नति की प्रबल भावना थी । समय समय पर आपका मार्गदर्शन एवं योगदान संगठन को मिलता रहा, जो सदैव अविस्मरणीय रहेगा ।

* **श्रीमती कस्तूरीबाई जैन** धर्मपत्नी स्व. श्री फूलचंदजी जैन (राख पंचमपुरवाले) का आसामयिक निधन 30 जनवरी को हो गया । आप बहुत ही धार्मिक प्रवृत्ति की महिला थी । मंदिर में आप अपने शांत स्वभाव के कारण काफी लोकप्रिय थी । आपने कुछ समय पूर्व ही जिन मंदिरों में स्वयं ही दानराशि प्रदान भेंट की । संभवत: आपको मृत्यु का आभास पहले से हो गया था ।

* **डॉ. विजेन्द्रकुमार जैन** का निधन 6 फरवरी 2017 को नागपुर में हो गया है । आप जबलपुर इंजीनियरिंग कालेज के प्रिंसिपल थे । आप समाज सेवा और समाज कार्यों में अपनी भागीदारी निभाते रहे ।

* **श्री सागरमलजी जैन** सुपुत्र स्व. श्री काशीराम जैन का देहांत 12 फरवरी को इन्दौर में हो गया । आपके परिजनों ने निधन पश्चात आपके नेत्रदान किये । आप सरल स्वभावी व हसमुख व्यक्तित्व थे । आपकी स्मृति में परिजनों ने गोलालारीय समाज को 1100/- व गोलालारीय दर्शन पत्रिका को 1100/- की राशि दान स्वरुप प्रदान की ।

* संत शिरोमणी 108 आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के आशीर्वाद एवं आर्यिका रत्न 105 गुणमति माताजी के ससंघ सान्निध्य में श्री प्रभाचंदजी जैन (स्वतंत्रता संग्राम सेनानी) की धर्मपत्नी समाधिस्थ व्रती श्राविका दशम प्रतिमाधारी **श्रीमती शांति बाई** का सल्लेखना पूर्वक समाधि मरण सहजपुर में दिनांक 17 जनवरी को हुआ।

प्रतिभावान बच्चों का सम्मान समारोह सम्पन्न

शांतिकुमार जैन, गंजाबासौदा । श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान के मंच से गोलालारीय दर्शन परिवार, इन्दौर द्वारा एवं प्रायोजक श्री अनिल कुमारजी दिवाकीर्ति द्वारा अपने पिता स्व. श्री नन्दनलालजी दिवाकीर्ति की स्मृति में-स्मृति चिन्ह व गोलालारीय दर्शन पत्रिका परिवार, इन्दौर की ओर से 78 प्रतिभावान बच्चों को प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया । सम्मान समारोह मुनि श्री 108 कुन्थुसागर जी महाराज के मार्ग दर्शन में सम्पन्न हुआ। इस शुभ अवसर पर मुनि श्री ने अपने प्रवचन में पाँच लाख रुपये का फण्ड बनाकर आर्थिक रूप से कमजोर बच्चों को सहायता राशि देने का सुझाव दिया इस सुझाव को सकल जैन समाज ने तुरंत स्वीकृति प्रदान कर दी व तुरन्त ही पाँच व्यक्तियों ने एक एक लाख की स्वीकृति दे दी । जिसमें प्रमुख हैं - श्री डॉ. अनिल कुमारजी दिवाकीर्ति, श्री निर्मल कुमारजी जैन, श्री आनन्द कुमारजी मोदी, श्री अनिल कुमारजी मोदी, श्री आलोक कुमारजी मोदी । इस फंड के माध्यम से आर्थिक रुप से कमजोर बच्चों को शिक्षा संबंधी सहयोग प्रदान किया जावेगा।

*** समाज के माननीय सदस्यों से सादर अनुरोध है कि आपके द्वारा गोलालारीय दर्शन पत्रिका में किसी भी मद में आपके द्वारा नगद/चेक द्वारा राशि जमा कराई गई हो (सीधे बैंक खाते में इन्दौर कार्यालय या क्षेत्रीय प्रतिनिधियों) और आपको रकम की रसीद प्राप्त नही हो पाई हैं तो आप हमें 9424013136 पर दोपहर 3 से रात 10 बजे तक सूचित कर सकते हैं ताकि आपको शीघ्र ही रसीद भिजवाने की व्यवस्था की जा सके। गोलालारीय दर्शन में सदस्यता शुल्क का विवरण पत्रिका पर लगे पते के स्टीकर पर उल्लेखित हैं। किसी भी प्रकार के सुधार के लिए आप चर्चा करते समय स्टीकर पर अंकित सदस्यता क्रमांक अवश्य बताएं ताकि उचित सुधार संभव हो सके।**

*** वर्तमान में 4200 परिवारों को पत्रिका नियमित भेज रहे हैं इन पतो में किसी भी प्रकार का परिवर्तन कराना चाहते हैं तो पत्रिका के वॉटसएप नं. 94067-44064 पर पोस्ट करे। यह फोन चर्चा हेतु उपलब्ध नहीं है ।**

गोलालारीय दर्शन के स्वामित्व एवं अन्य विषयों से संबंधित विवरण
घोषणा फार्म - 4 (नियम 8)

1.	प्रकाशक स्थल	127, देवी अहिल्या मार्ग, इन्दौर
2.	प्रकाशन अवधि	मासिक
3.	मुद्रक का नाम	बाहुबली जैन
	क्या भारत का नागरिक हैं	हाँ
	पता	310, उषा नगर एक्स., इन्दौर
4.	प्रकाशक का नाम	बाहुबली जैन
	क्या भारत का नागरिक हैं	हाँ
	पता	310, उषा नगर एक्स., इन्दौर
5.	संपादक का नाम	राजेन्द्र जैन
	क्या भारत का नागरिक हैं	हाँ
	पता	डीकेएन 230, विजय नगर, इन्दौर
6.	उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक से साझेदार या हिस्सेदार हों	श्री गोलालारीय दिगम्बर जैन समाज न्यास, इन्दौर

मैं बाहुबली जैन एतद् द्वारा घोषित करता हूँ मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं ।

हस्ताक्षर
बाहुबली जैन
1 मार्च 2017 (प्रकाशक के हस्ताक्षर)

बायोडॉटा प्रारूप का विवरण

1. क्रमांक
2. प्रत्याशी का पूरा नाम
3. स्वयं / मामा का गोत्र
4. जन्म दिनांक
5. जन्म समय (पत्रिका अनुसार)
6. जन्म स्थान
7. शिक्षा
8. कद / वजन
9. वर्ण
10. व्यवसाय
11. वार्षिक आय
12. कुंडली मिलान
13. मंगली
14. पत्र व्यवहार का पता
15. फोन / मोबाईल नं.
16. प्रत्याशी का ईमेल

प्रत्याशी का नवीन फोटो

---

1. 001
2. हर्षा डॉ. राकेश पंचरत्न
3. पंचरत्न
4. 22.06.1993
5. 16.45.32
6. इन्दौर
7. बी.ई. इलेक्ट्रीकल
8. -
9. गोरा
10. -
11. -
12. नहीं
13. -
14. 30, सम्भाजी नगर वरण गॉव रोड, भुसावल (महा.)
15. 9422778893, 02582-249566

---

1. 002
2. मोनालिसा अमितप्रकाश जैन
3. बिलौआ/चढ़ार
4. 12.04.1992
5. 22.40
6. पन्ना
7. एम.सी.ए
8. 5'2''
9. गोरा
10. असि. प्रोफेसर
11. -
12. -
13. -
14. विशुद्ध मेडिकल स्टोर, बडा बाजार, पन्ना (म.प्र.)
15. 8878819595, 9584662566

---

1. 003
2. पूर्वी पवन कुमार जैन
3. सिंघई/लांगुर
4. 27.10.1992
5. 15.00
6. पवई
7. एम.बी.ए.
8. 5'4''/50 कि.
9. गेहुँआ
10. यश बैंक, मुंबई
11. 5.00 लाख
12. नहीं
13. -
14. जैन मंदिर के सामने, झण्डा बाजार पवई जिला पन्ना (म.प्र.)
15. 9893508810

---

1. 004
2. रुपल सुरेन्द्रकुमार जैन
3. लांगुर/फणीश
4. 03.11.1987
5. 17.30
6. ललितपुर
7. एम.एस.सी, पीजीडीसीए
8. 5'5''
9. साफ
10. टीचिंग
11. -
12. हाँ
13. नहीं
14. 575, गौशाला अखाड़े के पीछे तालाबपुरा, ललितपुर
15. 8960595711, 8853667804

---

1. 005
2. अंशुल अशोककुमार जैन
3. जमोरिया/पंचरत्न
4. 23.09.1987
5. 5.30
6. इन्दौर
7. एम.बी.ए. (फायनेंस)
8. 5'
9. गोरा
10. सर्विस-इन्दौर
11. 1.50 लाख
12. हाँ
13. हाँ
14. जैन भवन, 449/3, नंदा नगर इन्दौर
15. 0731-4058893, 9893849602

---

1. 006
2. निधि जिनेन्द्र जैन
3. वैद्य/धमसैया
4. 10.03.1989
5. 7.15
6. इन्दौर
7. एम.बी.ए.
8. 5'1''/-
9. गोरा
10. सर्विस - हैदराबाद
11. -
12. -
13. -
14. 40, सुधीर मेडिकल स्टोर्स सनावद
15. 9826392742, 9826298110

---

1. 007
2. शुभम जिनेन्द्रकुमार जैन
3. बिलौआ/भंडारी
4. 04.05.1991
5. 12.50
6. झाँसी
7. बी.टेक (आईटी)
8. 5'5''
9. साफ
10. सॉफ्टवेयर इंजी.
11. 8.00 लाख
12. हाँ
13. नहीं
14. 52,तिलयानी बजरिया, झाँसी
15. 9452118911 9893800136

---

1. 008
2. अंकित अनिल कुमार जैन
3. पंचरत्न/गुड़ारे
4. 02.04.1990
5. 1.45
6. -
7. बी.टेक (सीएस)
8. 5'5''
9. गेहुआ
10. सॉफ्टवेयर इंजी., मुंबई
11. -
12. -
13. -
14. नया बस स्टैण्ड, तालबेहट जिला ललितपुर (उ.प्र.)
15. 9450033195

---

1. 009
2. अंशुल कन्छेदीलाल जैन
3. लागुर/गुडारे
4. 13.12.1987
5. 8.40
6. देवेन्द्रनगर
7. बी.एस.सी., एम.ए.
8. -
9. गेंहुआ
10. अंशुल वस्त्रालय (पवई)
11. पांच अंको में
12. -
13. -
14. किराना स्टोर, मोबाइल गैलरी, स्टेशनरी, राहुल मिल, देवेन्द्र नगर
15. 9977448873, 9977318302

---

1. 010
2. अमन प्रीतमकुमार जैन
3. वैद्य/पंचरत्न
4. 27.07.1988
5. 1.47
6. इन्दौर
7. एम.बी.ए.
8. 5'5''
9. गोरा
10. सर्विस-इंफोसिस
11. -
12. -
13. नहीं
14. 46 रामचंद्र नगर एक्स., रामकृष्ण काम्पलेक्स, इन्दौर
15. 9827224105, 0731-2417803

---

1. 011
2. आशीषकुमार श्रीचंद्र जैन
3. लांगुर/पंचरत्न
4. 26.02.1985
5. 02.05
6. विदिशा
7. एम.कॉम, एम.बी.ए.
8. 5'5''
9. -
10. पीडब्ल्यूडी/रेडियो जॉकी
11. 3.00 लाख
12. -
13. नहीं
14. किरी मोहल्ला, गली नं.2, विदिशा
15. 9981451978, 9827375381

---

1. 012
2. सचिन सुरेशकुमार जैन
3. पंचरत्न/गुड़ारे
4. 10.01.1979
5. 08.10
6. इन्दौर
7. ग्रेजुएशन
8. 5'7''/58 कि.
9. गौर
10. व्यवसाय
11. 6 अंको में
12. नहीं
13. हाँ
14. 252, वीआईपी परस्पर नगर इन्दौर
15. 9424091615, 0731-2992011

---

1. 013
2. सौरभ सुरेशकुमार जैन
3. पंचरत्न/गुड़ारे
4. 23.11.1984
5. 13.00
6. इन्दौर
7. ग्रेजुएशन
8. 5'6''/55 कि.
9. गौर
10. सर्विस
11. 2.40 लाख
12. नहीं
13. -
14. 252, वीआईपी परस्पर नगर इन्दौर
15. 9424091615, 0731-2992011

---

1. 014
2. सुशांत अनिलकुमार जैन
3. पंचरत्न/बिलौआ
4. 06.06.1988
5. 15.04
6. नई दिल्ली
7. बी.टेक (कम्प्यूटर सांइस)
8. 5'7''/70 कि.
9. साफ
10. नौकरी
11. 7.50 लाख
12. नहीं
13. नहीं
14. 103, कोरल पैलेस, मयंक ब्लू वाटर पार्क रोड, इन्दौर
15. 9165149781

सहयोग के लिए हाथ बढ़ाएँ

गोलालारीय दर्शन गत आठ वर्षो से सतत् प्रकाशित किया जा रहा हैं। समाज की एक मात्र पत्रिका को आर्थिक सुदृढ़ता प्रदान करने के लिए समय-समय पर हम आग्रह करते रहते हैं परंतु आज तक 2000 से अधिक राशि देने वाले 73 परिवार है व ₹ 25 से ₹ 2000 तक राशि देने वाले 220 परिवार है । सोचें 4200 गोलालारी परिवारों में से क्या सिर्फ 293 परिवार ही समाज के एकमात्र मुखपत्र गोलालारीय दर्शन को आर्थिक सहयोग देने में सक्षम है या हम स्वयं ही अपने गोलालारीय समाज को आगे बढ़ता देखना नहीं चाहते है सिर्फ यही चर्चा करते है कि समाज कुछ भी नहीं कर रहा है । आप और हम सब अपनी अपनी आर्थिक स्थिति से भली भांति परिचित हैं फिर भी ना जाने क्यों समाज की एक मात्र पत्रिका को सम्मानजनक राशि देनें में हम सभी संकोच क्यों करते हैं ??

इस पत्रिका के माध्यम से हम समाज के प्रतिभाशाली बच्चों, लेखन में रूचि रखने वाले व समाज कार्यों में सक्रिय भूमिका निभाने वाले सदस्यों को मंच प्रदान कर रहे हैं । यहां तक की वर वधु तलाशने में भी पत्रिका अपनी अहम भूमिका निभा रहा हैं । गतवर्ष **''प्रयास'' रिश्तों को जोडनें का** पुस्तक का प्रकाशन कर विवाह संबंधी काफी जानकारियां प्रदान करने की कोशिश की हैं, इस माध्यम से कई संबंध भी तय हुए हैं हमारा आपसे बस इतना सा अनुरोध है कि विवाह समारोह में होनें वाले खर्च की जाने वाली राशि का आधा प्रतिशत राशि भी सहयोग के रूप में प्रदान कर विवाह समारोह का विज्ञापन प्रकाशित करके एक पंथ दो काज कर सकते हैं । एक तो इस पल की स्मृति को चिरस्थायी बना सकते हैं और दूसरे आपके इस प्रयास से पत्रिका को आर्थिक सहयोग प्राप्त हो जावेगा, जो पत्रिका को प्राणवायु देने का काम करेगा।

परिवार में होने वाले मांगलिक प्रसंगों (जन्मदिवस, 25 वीं या 50 वीं शादी की वर्षगांठ या धार्मिक आयोजन) के समाचार सचित्र सशुल्क प्रकाशित करवा कर इन पलों को चिरस्थायी बनाकर पत्रिका को आर्थिक सुदृढ़ता प्रदान करेगा । आपके परिवार के धार्मिक आयोजन को भी सचित्र प्रकाशित करवा सकते हैं । आप सहयोग राशि पेज नंबर 2 पर अंकित बैंक खाते में सीधे जमा करा सकते है ।

श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान एवं विश्व शांति महायज्ञ सानंद सम्पन्न

राकेश जैन, जयपुर । दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र पावगिरीजी (पवाजी) में श्री सिद्धक्षेत्र महामंडल विधान एवं विश्व शांति महायज्ञ का भव्य आयोजन विदिशा निवासी हीरालाल जैन, राकेश जैन, अभिषेक जैन, अर्हम जैन एवं नीरव जैन परिवार द्वारा कराया गया। उपाध्याय श्री 108 संयमसागर जी महाराज के मंगल सानिध्य एवं विदिशा निवासी पंडित श्री महेन्द्र कुमारजी के कुशल निर्देशन में अत्यन्त भक्तिभाव पूर्वक विधान संपन्न हुआ । ध्वजारोहण, घटयात्रा, अभिषेक, शांतिधारा, नित्यनियम पूजन के पश्चात् विधान प्रारंभ हुआ तत्पश्चात् प्रतिदिन प्रातः अभिषेक, शांतिधारा, नित्यनियम पूजन, विधान पूजन एवं महाराज श्री के प्रवचन दोपहर में तत्वचर्चा, सायंकाल प्रतिक्रमण, सामायिक, आरती एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम श्रीमती आभा जैन, श्रीमती अभिलाषा जैन, श्रीमती सोनल जैन एवं श्रीमती दीप्ती जैन के संयुक्त निर्देशन में संपन्न हुए । इस दौरान विभिन्न नृत्य, भजन गीत एवं नाटकों का मंचन हुआ सांस्कृतिक कार्यक्रमों में संगीतकार श्री प्रदीप जैन एण्ड म्यूजिकल ग्रुप, ललितपुर का सहयोग विशेष रुप से प्राप्त हुआ। पुण्यार्जक परिवार ने स्थानीय समाज एवं दिगम्बर जैन सिद्ध क्षेत्र पावागिरी की प्रबंधकारिणी कमेटी का हृदय से आभार व्यक्त किया हैं।

8 मार्च अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर विशेष....

हर नारी का हो सम्मान

भारतीय संस्कृति में नारी के सम्मान को बहुत महत्व दिया गया है । संस्कृत में एक श्लोक है - 'यस्य पूज्यंते नार्यस्तु तत्र रमन्ते देवताः । अर्थात् जहां नारी की पूजा होती है, वहां देवता निवास करते है । किन्तु वर्तमान में जो हालात दिखाई देते हैं, उसमें नारी का हर जगह अपमान होता चला जा रहा है । उसे 'भोग की वस्तु' समझकर आदमी 'अपने तरीके' से इस्तेमाल कर रहा है । यह बेहद चिंताजनक बात है लेकिन हमारी संस्कृति को बनाए रखते हुए नारी का सम्मान कैसे किया जाये, इस पर विचार करना आवश्यक है ।

माता का हमेशा सम्मान हो - मां अर्थात् माता के रुप में नारी, धरती पर अपने सबसे पवित्रतम रुप में है । माता यानी जननी । मां को ईश्वर से भी बढ़कर माना गया है , क्योंकि ईश्वर की जन्मदात्री भी नारी ही है । माँ त्रिशला तथा वामादेवी के संदर्भ में हम देख सकते हैं इसे । किन्तु बदलते समय के हिसाब से संतानों ने अपनी मां को महत्व देना कम कर दिया है । यह चिंताजनक पहलू है । सब धन लिप्सा व अपने स्वार्थ में डूबते जा रहे हैं परन्तु जन्म देने वाली माता के रूप में नारी का सम्मान अनिवार्य रूप से होना चाहिए, जो वर्तमान में कम हो गया है, यह सवाल आजकल यक्षप्रश्न की तरह चहुंओर पांव पसारता जा रहा है । इस बारे में वर्तमान व नई पीढ़ी को आत्मावलोकन करना चाहिए ।

बाजी मार रही हैं लड़कियां - आज कल की लड़कियों पर नजर डालें तो हम पाते हैं कि ये लड़कियां आजकल सभी क्षेत्रों में बाजी मार हर क्षेत्र में आगे बढ़ते हुए देखा जा सकता है । विभिन्न परीक्षाओं की मेरिट लिस्ट में लड़कियां तेजी से आगे बढ़ रही हैं । इन्होंने अपनी मेहनत और मेधा शक्ति के बल पर ही हर क्षेत्र में प्रवीणता अर्जित कर ली है । इनकी इस प्रतिभा का सम्मान किया जाना चाहिए ।

कंधे से कंधा मिलाकर चलती नारी - नारी का सारा जीवन पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने में ही बीत जाता है । पहले पिता की छत्रछाया में उसका बचपन बीतता है । पिता के घर में भी उसे घर का कामकाज करना होता है, साथ ही अपनी पढ़ाई भी जारी रखनी होती है । उसका यह क्रम विवाह तक जारी रहता है । उसे इस दौरान घर के कामकाज के साथ पढ़ाई लिखाई की दोहरी जिम्मेदारी निभानी होती है जबकि इस दौरान लड़कों को पढ़ाई लिखाई के अलावा और कोई काम नहीं रहता है । कुछ नवयुवक तो ठीक से पढ़ाई भी नहीं कर पाते । इस नजरिए से देखा जाए तो नारी सदैव पुरुष से भी अधिक जिम्मेदारियों का निर्वहन करती है ।

विवाह पश्चात तो महिलाओं पर और भी अधिक जिम्मेदारियों आ जाती है । पति, सास-ससुर, देवर-ननद की सेवा के पश्चात उनके पास अपने लिए समय ही नहीं बचता है । संतान के जन्म के बाद तो उनकी जिम्मेदारी और भी बढ़ जाती है । घर-परिवार, चौके-चूल्हे में ही एक आम महिला का जीवन कब बीत जाता है, पता ही नहीं चलता । कई बार वे अपने अरमानों को घर परिवार की खातिर भूल जाती है। उन्हें इतना समय ही नहीं मिल पाता है कि वे अपने लिए भी जिए । परिवार की खातिर अपनी इच्छाओं को छोड़ने में भारतीय महिलाएं सबसे आगे हैं । परिवार के प्रति उनका यही त्याग उन्हें सम्मान का अधिकारी बनाता है ।

बच्चों में संस्कार डालना - बच्चों में संस्कार भरने का काम मां के रुप में नारी द्वारा ही किया जाता है । बच्चों की प्रथम गुरु मां ही होती है । मां के व्यक्तित्व कृतित्व का असर बच्चों पर पड़ता है । इतिहास उठाकर देखे तो मां जीजाबाई ने शिवाजी महाराज में श्रेष्ठ संस्कारों का बीजारोपण किया था । जिसका ही परिणाम है कि शिवाजी महाराज को हम आज भी उनके श्रेष्ठ कर्मों के कारण आज भी जानते है । बेहतर संस्कार देकर बच्चे को समाज में उदाहरण बनाना, नारी ही कर सकती है ।

अद्रभता की पराकाष्ठा - आजकल महिलाओं के साथ अभद्रता की पराकाष्ठा हो रही है । हम रोज ही अखबारों और न्यूज चैनलों में महिलाओं के साथ छेड़छाड़ या अभद्र व्यवहार की कई घटनायें पढ़ते व देखते है । इसे नैतिक पतन ही कहा जाएगा । शायद ही कोई दिन आता हो, जब महिलाओं के साथ अभद्रता पर समाचार सुनने को ना मिले । नारी के सम्मान और उसकी अस्मिता की रक्षा के लिए इस पर विचार व रक्षा करना बेहद जरुरी है । हम सबकी नैतिक जवाबदारी है कि यदि उन्हें किसी भी तरह से प्रताड़ित किया जा रहा है तो न्यायसंगत सुविधायें निशुल्क प्रदान की जाना चाहिए ।

आप भी बन सकती है हमारी संवाददाता -

आप लेखन या सामाजिक/धार्मिक कार्यों में रुचि रखती है, तो अपने नगर में हो रहे कार्यक्रमों का सचित्र समाचार हमारे वाट्सएप्प नंबर 9406744064 पर भेज कर गोलालारीय दर्शन पत्रिका में संवाददाता की भूमिका निभा सकती है । लेखन में रुचि रखने वाली महिलाओं के लेखों को हम सचित्र सादर आमंत्रित करते है ।

अशालीन वस्त्र भी एक कारण - कतिपय 'आधुनिक' महिलाओं का पहनावा भी शालीन नहीं हुआ करता है । इन वस्त्रों के कारण भी यौन अपराध बढ़ते जा रहे हैं । इन महिलाओं का सोचना कुछ अलंग ढ़ंग का हुआ करता हैं । वे सोचती हैं कि हम आधुनिक है । यह विचार उचित नहीं कहा जा सकता हैं । अपराध होने पर यह बात उभर कर सामने नहीं आ पाती है कि उनके वस्त्रों के कारण भी यह अपराध प्रेरित हुआ है । कामकाजी महिलाओं को विशेष रुप से अपने वस्त्रों का चयन सावधानीपूर्वक करना चाहिए जिससे वे सहकर्मियों व समाज के बीच अभद्र व गलत सोच विकसित न हो पाये ।

देवी अहिल्याबाई होलकर, मदर टेरेसा, इला भट्ट, महादेवी वर्मा, राजकुमारी अमृत कौर, सुचेता कृपलानी और कस्तूरबा गांधी आदि जैसी कुछ प्रसिद्ध महिलाओं ने अपने मन-वचन व कर्म से सारे जग-संसार में अपना नाम रोशन किया है । इंदिरा गांधी ने अपने दृढ़ संकल्प के बल पर भारत व विश्व राजनीति को प्रभावित किया है । उन्हें लौह-महिला यूं ही नहीं कहा जाता है । दृढ़ चट्टान की तरह वे अपने कर्मक्षेत्र में कार्यरत रहीं ।

हम हर महिला का सम्मान करें । अवहेलना, भ्रूण हत्या और नारी की अहमियत न समझने का परिणाम स्वरुप महिलाओं की संख्या, पुरुषों के मुकाबले आधी भी नहीं बची है । इंसान को यह नहीं भूलना चाहिए, कि नारी द्वारा जन्म दिए जाने पर ही वह दुनिया के अस्तित्व बना पाया है और यहां तक पहुंचा है । उसे ठुकराना या अपमान करना सही नहीं है । भारतीय संस्कृति में महिलाओं को सरस्वती देवी, दुर्गा व लक्ष्मी आदि का यथोचित सम्मान दिया गया है अत: उन्हें उचित सम्मान दिया ही जाना चाहिए ।

*** अर्चना जैन, तिलक नगर, इन्दौर**

* पत्रिका के आर्थिक सहयोग के लिए सादर आभार *

विशेष सहयोगी 2100/-

श्री प्रदीपकुमार जैन, मणीनगर, अहमदाबाद

श्री मुन्नालाल जैन, पिपरा, ललितपुर

हीरक जन्मदिवस की हार्दिक बधाईयां

श्री खुशालचंदजी जैन का 75वां जन्मदिवस सादगीपूर्ण तरीके से परिजनों व इष्टमित्रों के साथ मनाया गया । आपने सेवानिवृत्ति पश्चात समाजकार्यों में विशेष रुचि रखते हुए गोलालारीय समाज न्यास के अध्यक्ष के रुप में कार्य संभालते हुए समाज कार्यों को गति प्रदान की । आपके मार्गदर्शन में समाज की समस्त संस्थाएँ प्रगति पथ पर अग्रसर है । समाज में आपके विशेष योगदान व रुचि को ध्यान रख न्यास द्वारा आपको आजीवन ट्रस्टी व गोलालारीय दर्शन में प्रबंध संपादक के रुप में मनोनीत किया गया है । हम आशा करते है आप स्वस्थ व दीर्घायु रहकर समाज को निरंतर मार्गदर्शन प्रदान करते रहेंगे । ''गोलालारीय दर्शन'' परिवार की ओर से मंगलमयी बधाईयाँ ।

गोलालारीय दर्शन परिवार वाट्सएप्प पर हर शहर का एक सामाजिक ग्रुप बनाना चाहता है, जिसमें वहां की सामाजिक गतिविधियां, धार्मिक कार्यक्रम व शोक संदेशों का प्रचार प्रसार तत्काल किया जा सके । इस माध्यम से हम राष्ट्रीय स्तर पर संपूर्ण गोलालारीय समाज को जोड़ने का प्रयास कर रहे है । **इस ग्रुप में हमारा प्रयास रहेगा कि श्रीजी, आचार्यश्री व मुनिराजों के चित्र व अनावश्यक संदेशों को नहीं भेजे ।** यह संचार सेवा समाज सदस्यों के लिए उपयोगी सिद्ध हो ऐसी जानकारी इसमें पोस्ट की जावे । आप यदि इससे सहमत है तो अपनी स्वीकृति में अपना नाम, शहर का नाम के साथ 9406744064, 9407453066 पर भेज देवें ।

मार्च का महीना अर्थात बच्चों और माता पिता की परीक्षाओं का समय है विशेष रुप से माताओं की भूमिका अहम रहती है । गहन अध्ययन और कठोर परिश्रम से आप सभी उच्चांक प्राप्त करें । इसके लिए गोलालारीय दर्शन परिवार की ओर से ढ़ेर सारी शुभकामनाएँ । परीक्षा परिणाम आने के पश्चात आपको एक और जिम्मेदारी पूर्ण करना है । अपनी अंकसूची की फोटोकॉपी और अपना पासपोर्ट फोटोग्राफ हम तक अवश्य भेजें ताकि आगामी जुलाई अंक में प्रकाशित होने वाले प्रतिभाशली छात्र छात्राओं में आपका नाम जुड़ सके । आगामी अंक में आवेदन पत्र प्रकाशित होगा, जिसे पूर्ण एवं स्वच्छ रुप भरकर समय पर हमारे कार्यालय में भेजना न भूले ।

हार्ट अटैक का रिस्क कम करती है मेथी

*** डायबिटीज में फायदेमंद –** मेथी खून में शुगर की मात्रा को संतुलित करती है। जो लोग डायबिटीज से ग्रसित हैं वे मेथी के 5 से 6 दानों का सेवन नित्य करें। *** हार्ट अटैक –** मेथी दाने कोलेस्ट्रॉल को नियंत्रित रखते हैं इसलिए हार्ट अटैक के रिस्क को कम करते है। अपने भोजन में मेथी का साक या मेथी के दानों को इस्तेमाल करें। *** गैस से पेट में दर्द होना –** सूखी या हरी मेथी का सेवन रोज़ाना करे, यह शरीर में मौजूद 80 प्रकार के वायु रोगों को नियंत्रित करती है। *** सर्दी–जुकाम होने पर –** कफ दोष की वजह से जिन्हें हमेशा सर्दी–जुकाम रहता है वे सरसों के तेल को गरम करके अदरक और लहसुन डालकर बनाई गई मेथी की सब्जी का सेवन नित्य करें। *** हाथ–पैर के दर्द में –** वायु रोग के कारण हाथ और पैरों में दर्द होता है। इस दर्द से राहत पाने के लिए मेथी दानों को घी में सेंककर उसका चूर्ण बनाकर उसके लड्डू बनाकर प्रतिदिन एक लड्डू खाने से आपको दर्द से निजात मिलेगी। *** लो ब्लड प्रेशर –** यदि आप निम्न रक्तचाप से परेशान है तो मेथी की सब्जी में लहसुन, अदरक और गरम मसाला डालें और नित्य सेवन करें। *** बुखार और गले में दर्द –** जब भी बुखार और गले में दर्द हो तो शहद में एक चम्मच नींबू का रस और मेथी को मिलाकर सेवन करें। आपको जल्द ही इन रोगों से राहत मिल जाएगी।

मेथी के अन्य फायदे – 1) बालों पर मेथी के दानों का पेस्ट लगाने से बालों का झड़ना दूर हो जाता है। 2) मेथी से निकले पानी को दांतों पर रगड़ने से दांत पक्के और मजबूत बनते हैं। 3) मधुमेह और दिल की बीमारी से परेशान लोगों को मेथी की सब्जी में प्याज डालकर खाना चाहिए। 4) मेथी खाने से बुखार, कफ और पेट की गैस खत्म होती है। 5) मेथी के पाउडर को दूध के साथ लेने से मधुमेह ठीक होने लगता है। 6) कान का दर्द, लकवा और मिर्गी में मेथी काढ़े का सेवन करने से फायदा मिलता है। 7) एक कप पानी में 2 चम्मच मेथी को उबालकर पीने से पेट के छालें और आंतों की सफाई हो जाती है। **– संकलन पुष्पा जैन, जबलपुर**

वास्तु टिप्स

1. घर में सुबह सुबह कुछ देर के लिए भजन अवश्य लगाएं। 2. घर में कभी भी झाड़ू को खड़ा करके नहीं रखें, उसे पैर नहीं लगाएं, न ही उसके ऊपर से गुजरे अन्यथा घर में बरकत की कमी हो जाती हैं। झाड़ू हमेशा छुपा कर रखें। 3. बिस्तर पर बैठकर कभी खाना न खाएं, ऐसा करने से धन की हानि होती हैं। लक्ष्मी घर से निकल जाती हैं। घर में अशांति होती हैं। 4. घर में जूते–चप्पल इधर–उधर बिखेर कर या उल्टे सीधे करके नहीं रखने चाहिए इससे घर में अशांति उत्पन्न होती हैं। 5. पहली रोटी गाय के लिए निकालें। 6. घर में सदैव जल का एक कलश भरकर रखे जो जितना संभव हो ईशान कोण के हिस्से में हो। 7. आरती, दीप, पूजा, अग्नि जैसे पवित्रता के प्रतिक साधनों को मुंह से फूंक मारकर नहीं बुझाएं। 8. घर के मुख्य द्वार पर दायीं तरफ स्वास्तिक बनाएं। 9. घर में कभी भी जाले न लगने दें, वरना भाग्य और कर्म पर जाले लगने लगते हैं और बाधा आती हैं। 10. सप्ताह में एक बार जरुर समुद्री नमक अथवा सेंधा नमक से घर में पोछा लगाएं। इससे नकारात्मक ऊर्जा हटती हैं। 11.कोशिश करें की सुबह के प्रकाश की किरणें आपके घर में जरुर पहुचें सबसे पहले। 12. घर में अगर कोई प्रतिष्ठित मूर्ति हैं तो उसकी पूजा हर रोज निश्चित रूप से हो, ऐसी व्यवस्था करे। **– अनिता जैन, ललितपुर**

शब्द जाल प्रतियोगिता–15

अभी अभी आपने रंगों की होली खेली है। आइये देखते हैं रंगों को आप कितना पहचानते हैं। सही उत्तर के लिये दिये गये बॉक्स में एक एक अक्षर लिखें व शब्द पूरा करें – प्रथम उदाहरण के लिये रुप में हल किया गया है।

(1) शांति और पवित्रता का प्रतीक है — स फे द
(2) संतुलन और सद्भाव का प्रतीक है
(3) गगन का रंग है
(4) गहराई और स्वच्छता का प्रतीक है
(5) समृद्धि और खुशहाली का प्रतीक है
(6) प्रसन्नता और आध्यात्मिकता का प्रतीक है
(7) ज्ञान का प्रतीक है
(8) ऊर्जा और प्रेम का प्रतीक है
(9) उपरोक्त सातों रंगों के वर्णाक्षरों को इसी क्रम में लगाने पर बनता है

प्रविष्टि निम्नलिखित पते पर भेजें – **'गोलालारीय दर्शन' 16, महारानी रोड, इन्दौर या 64, न्यू देवास रोड, इन्दौर**। प्राप्त सही प्रविष्टियों का ड्रा निकालकर प्रथम 5 विजेताओं को के नाम निकालकर आगामी अंक में उनके फोटो भी प्रकाशित किये जायेंगे। *** नियम –** प्रतियोगिता सभी आयु वर्ग महिला / पुरुष / बच्चों के लिए है। प्रविष्टि भेजने की **अंतिम तिथि 15 अप्रैल 2017 तक** सही जवाब के साथ प्रतियोगी परिवार प्रमुख का नाम, टेलीफोन नंबर एवं प्रत्याशी का नवीन फोटो लगाकर पूर्ण पता मय पिनकोड के साथ अवश्य भेज सकते है या **हमारे वाट्सएप्प नंबर 9406744064** पर उत्तर अंकित कर अपना फोटो व पूर्ण पता लिखकर भेज सकते है। विशेष – उत्तर भेजते समय आपका सदस्यता क्रमांक **(आपको प्रेषित किये गये पत्रिका के पते के स्टीकर पर अंकित है)** अवश्य लिखे अन्यथा जवाब को शामिल नहीं किया जावेगा। संपादक मंडल का निर्णय अंतिम एवं सर्वमान्य होगा। अपूर्ण जानकारी होने पर प्रविष्टी को निरस्त किया जा सकता है।

"पानी पीने का सही वक्त"

(1) 3 गिलास सुबह उठने के बाद, अंदरूनी ऊर्जा को बढ़ाता हैं
(2) 1 गिलास नहाने के बाद, ब्लड प्रेशर का खात्मा करता हैं
(3) 2 गिलास खाने से 30 मिनिट पहले, हाजमे को दुरुस्त रखता हैं
(4) आधा गिलास सोने से पहले, हार्ट अटैक से बचाता हैं

विवाहोत्सव की हार्दिक शुभकामनाएँ

हृदयांश आशीष

सुपौत्र : स्व.श्रीमती ललिताबाई–स्व. श्री फूलचंदजी शास्त्री
सुपुत्र : श्रीमती सुलोचना–राजकुमार जैन, जखौरा, ललितपुर
का शुभ विवाह

हृदयांशी वर्षा (शिल्पी)

सुपौत्री : स्व. श्री घनश्यामजी जैन
सुपुत्री : श्रीमती सुगंधी–राजेन्द्रकुमार जैन, बड़ा मल्हरा, छतरपुर
के साथ 7 फरवरी 2017 को बड़ा मल्हरा में संपन्न हुआ।

नवदाम्पत्य जीवन की हार्दिक शुभकामनाएँ...

चि. आयुष

सुपौत्र : श्रीमती रत्नप्रभा-स्व. श्री धरमचंदजी मनोरिया
सुपुत्र : सौ. ज्योति-संतोषकुमार मनोरिया, बेड़िया

सौ.कां. मानसी

सुपौत्री : स्व. श्रीमती गेंदाबाई-स्व. बाबूलालजी मोदी
सुपुत्री : सौ. गुणमाला-राजेशकुमारजी मोदी, होशंगाबाद

मंगल परिणय सूत्र

दिनांक 21 फरवरी 2017 को जायसवाल कोठी, औंकारेश्वर में संपन्न ।

प्रतिष्ठान -

अर्चना मेडिकल, बेड़िया * न्यू अर्चना मेडिकल, बेड़िया * अर्चना फैशन पांइट, सनावद

नवदाम्पत्य जीवन की हार्दिक शुभकामनाएँ...

हृदयाँश इंजी. अनुज

सुपौत्र : कीर्तिशेष श्री बालचन्द्र जैन
सुपुत्र : श्रीमती किरन-रमेशचन्द्रजी जैन, झाँसी

का

मंगल परिणय

हृदयाँशिका इंजी. प्रीनि

सुपौत्री : कीर्तिशेष सिंघई गुलाबचंद जैन
सुपुत्री : श्रीमती निधि-प्रदीपकुमार जैन, शाजापुर

के साथ 17 जनवरी 2014 को
अतिशय क्षेत्र करगुवाँजी, झांसी में संपन्न हुआ ।

विवाहोत्सव की हार्दिक शुभकामनाएँ

चि. अमित संग **सौ.कां. शिखा**

सुपौत्र : श्रीमती सुशीला-स्व. श्री दयाचन्द्र जैन
सुपुत्र : श्रीमती ज्योति-अशोक जैन

सुपौत्री : स्व. श्री खूबचंदजी जैन
सुपुत्री : श्री कैलाशचंद-मालती जैन

चि. आलोक संग **सौ.कां. कीर्ति**

सुपौत्र : श्रीमती सुशीला-स्व. श्री दयाचन्द्र जैन
सुपुत्र : श्रीमती विमला-विजय जैन

सुपौत्री : शाह श्री धर्मचंद्रजी जैन
सुपुत्री : श्री सुखमालचंद्र-आशा जैन

का

शुभ विवाह

इन्दौर में दिनांक 13 दिसम्बर 2016 को संपन्न हुआ।

प्रतिष्ठान - जैन रेस्टॉरेंट * जैन कम्प्यूटर केयर * जैन न्यूज़ पेपर एजेंसी

विवाहोत्सव की हार्दिक शुभकामनाएँ

चि. अंकित संग **सौ.कां. दर्शना**

सुपौत्र : स्व. धरमचंद्र-स्व. चन्द्रकला जैन
सुपुत्र : अनिल-सुलोचना जैन

सुपौत्री : स्व. श्री बालचंद्र-स्व. प्रेमादेवी जैन
सुपुत्री : श्री हरिशचन्द्र-सरोजदेवी जैन

का

शुभ विवाह

कान्हा गार्डन, इन्दौर में

दिनांक 22 जनवरी 2017 को संपन्न हुआ।

परिणायोत्सव की शुभकामनाएँ

लेफ्टीनेंट विभोर संग **सौ.कां. श्रेया**

सुपौत्र : स्व.मैदाबाई-स्व. सुखनंदनलाल जैन
सुपुत्र : डॉ. मधु-जिनेन्द्रकुमार जैन
भोपाल

सुपौत्री : श्रीमती सुशीला-स्व. श्री निर्मलचंद जैन
सुपुत्री : डॉ. रजनी-डॉ. प्रदीपजी जैन
भोपाल

का

शुभ विवाह

भोपाल में दिनांक 22 जनवरी 2017
को वृन्दावन पैलेस में उल्लासपूर्वक संपन्न हुआ

विवाहोत्सव की हार्दिक शुभकामनाएँ

इंजी. गौरव संग **इंजी. स्तुति**

सुपौत्र : स्व. श्रीमती क्षमा-स्व. श्री बाबूलाल जैन
सुपुत्र : ममता-अरविंदकुमार जैन
ललितपुर

सुपौत्री : स्व. श्री लक्ष्मीचन्द्र जैन
सुपुत्री : रजनी-इं. राजेन्द्रकुमारजी जैन
लखनऊ

का

मंगल परिणय

ललितपुर के होटल ललित पैलेस में
दिनांक 14 दिसम्बर 2016 को
धूमधाम से संपन्न हुआ।

नवदाम्पत्य जीवन की हार्दिक शुभकामनाएँ

चि. आकाश संग **सौ.कां. अंकिता**

सुपौत्र : स्व. श्री त्रिलोकचंदजी जैन
सुपुत्र : सौ. मुक्ता-दिनेशकुमार जैन (नागपुर)

सुपौत्री : स्व. श्री उदयचंदजी जैन
सुपुत्री : सौ. अनीता-अजयकुमार जैन (नागपुर)

शुभकामनाओं सहित...

श्रीमती मेंदाबाई-त्रिलोकचंद जैन
सौ. मुक्ता-दिनेशकुमार जैन

मंगल परिणय
दिनांक 30 नवम्बर 2016 को नागपुर में संपन्न ।

दाम्पत्य जीवन की हार्दिक शुभकामनाएँ...

चि. मधुर

सुपौत्र : स्व. श्रीमती चम्पीबाई-स्व. मन्नीलाल जैन
सुपुत्र : श्रीमती शोभा-मदनकुमार जैन,
नागपुर

का शुभ विवाह

सौ.कां. हर्षिता

सुपौत्री : स्व. श्री टीकमचंदजी जैन
सुपुत्री : श्रीमती नीता-श्री अनिलकुमारजी जैन,
जबलपुर

के साथ
20 जनवरी 2017
को हार्दिक लॉज, नागपुर में
साआनंद संपन्न हुआ ।

शुभकामनाओं के साथ...

मदनकुमार-शोभा जैन

प्रतिष्ठान - श्री धरमदास मन्नीलाल जैन ✲ सिद्धार्थ ट्रेडिंग कंपनी
✲ बॉम्बे सागर रोडवेज़ ✲ सिंदेवाही गुड्स गैरेज

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने है, सम्पादक मण्डल का इससे सहमत होना आवश्यक नहीं है । किसी भी प्रकार का विवाद होने पर न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा ।

स्वामी श्री गोलालारीय दिगम्बर जैन समाज न्यास के लिए प्रकाशक, मुद्रक बाहुबली जैन द्वारा प्रकाशित प्रतीक्षा ग्राफिक्स127, देवी अहिल्या मार्ग इन्दौर से मुद्रित एवं ग्राफिक्स जील कम्प्यूटर एंड ग्राफिक्स 356, तिलक नगर श्री गोलालारीय दि. जैन समाज न्यास, 64, न्यू देवास रोड़, इन्दौर (म.प्र.) से प्रकाशित